TITLE CODE : UPHIN50246

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

लोक पहल

शाहजहाँपुर | मंगलवार 07 | नवम्बर 2023 | शाहजहाँपुर से प्रकाशित | वर्ष : 2 | अंक : 35 | पृष्ठ : 8+4 | मूल्य 2 रुपये

धतनेरस के लिए सज गया बाजार

डिजाईनर क्राकरी व ज्वैलरी बनी आकर्षण का केन्द्र, इलेक्ट्रानिक और बर्तनों की दुकानों पर भी ग्राहकों की भीड़

शाहजहांपुर (लोक पहल)। धनतेरस के लिए सराफा बाजार से लेकर क्राकरी, बर्तन, फर्नीचर, इलेक्ट्रानिक व इलेक्ट्रिकल उपकरणों का बाजार सजकर तैयार हो गया है। धनतेरस से पहले ही बाजार में ग्राहकों की भीड़ दिखाई देने लगी है। खासतौर से इलेक्ट्रानिक बाइक व स्कूटर व क्राकरी की दुकानों पर ग्राहकों की भीड़ जुटना शुरू हो गई है। आभूषण खरीदने के लिए शहर व ग्रामीण क्षेत्रों के लोग जुट रहे हैं। सराफा व्यापारियों ने ग्राहकों को लुभाने के लिए कई उपहार भी रखे हैं। कई सर्राफा व्यापारियों ने मोटरसाइकिल, स्कूटी, फ्रिज, कूलर, एलइडी, अलमारी के आदि के अलावा अन्य उपहार में दे रहे हैं।

सराफा बाजार में लगातार ग्राहकों की खरीदारी के चलते रौनक बनी हुई है। व्यापारियों ने अपनी दुकानों को विद्युत झालरों और फूलों की मालाओं से दुल्हन की तरह सजा रखा है। कई दुकानों पर आभूषणों की खरीदारी करने आ रहे ग्राहकों पर पुष्प वर्षा कर स्वागत सत्कार भी किया जा रहा है। वहीं इलेक्ट्रानिक व दोपहिया व चार पहिया के वाहनों के शोरूम पर भी खरीद पर छूट के साथ उपहार देकर ग्राहकों को आकर्षित किया जा रहा है। शहर के मुख्य इलेक्ट्रानिक कारोबारी पाठक इंटरप्राइजेज के सुवनीत पाठक ने बताया कि उनके यहां 55 इंच के एलईडी के साथ एसी मुफ्त दिया जा रहा है। उन्होने बताया कि इस बार पिछले कई वर्षो की अपेक्षा दीपावली पर अच्छी बिक्री होने का अनुमान है। आभूषण व्यापारी रवि सर्राफने बताया कि उनके यहां धनतेरस के अवसर पर हर खरीद पर ग्राहकों को निश्चित उपहार दिए जाएंगे साथ ही चांदी के आभूषणों पर दस से 20 प्रतिशत तक की छूट दी जा रहा है। आभूषणों के शोरूम पर सोने चांदी की ज्वैलरी के अलावा हीरे के आभूषण भी आकर्षक डिजाइनों में उपलब्ध है जो ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित कर रहे है। साथ सोने चांदी के गणेश लक्ष्मी की मांग भी बड़ी संख्या दिखाई दे रही है। सराफा व्यापारियों का मानना है कि इस बार सोने चांदी के दामों में स्थिरता रहने के बारण खरीददारी के प्रति लोगों का रूझान बढ़ सकता है। क्राकरी और बर्तना की दुकानों पर भी नए नए डिजाईन के बर्तन और ब्रांडेड क्राकरी लोगों के आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है। दीपावली पर बिना मिठाई के बात करना कुछ फीका सा लगता है मिठाई व्यापारियों ने दीपावली की तैयारियां करीब एक माह पहले करना शुरू कर दिया है।

माना जा रहा है इस बार करीब दो करोड़ की मिठाईयां शहरवासी खरीदकर खुद इस्तेमाल करेंगे या अपने ईष्ट मित्रों को उपहार में दे देंगे। हालांकि रोषनी के पर्व दीपावली पर चाइनीज झालरों ने अपना अहम स्थान बना लिया है लेकिन इस बार लोगों में मिट्टी के दिये जलाने को लेकर खासा आकर्षण दिखाई दे रहा है जिसके चलते इस बार कुम्हारों की दीवाली भी रोशन होने की पूरी उम्मीद है। मिठाई के साथ-साथ गिफ्ट पैक की भी भारी मांग दिखाई दे रही है गिफ्ट पैक की दुकानों पर ग्राहकों की भारी भीड़ उमड़ रही है।

दीपावली और धनतेरस का त्योहार के चलते शहर व ग्रामीण क्षेत्रों के ग्राहक नई-नई डिजाइनों और आकर्षक आभूषणों को खरीदने के लिए उमड़ पड़े हैं। कई ग्राहक शुभ मुहूर्त में आभूषणों की खरीदारी कर रहे हैं। सराफा व्यापारी सचित प्रकाश के अनुसार, दीपावली और धनतेरस के त्यौहार को लेकर ग्राहक काफी उत्साहित हैं। इस बार ग्राहक खूब खरीदारी कर रहे हैं। पिछले वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष ग्राहक ज्यादा आभूषण खरीद रहे हैं। ज्यादातर ग्राहक सोने के आभूषणों के अलावा चांदी की मूर्तियां, बर्तन आदि भी खरीद रहे हैं। कई ग्राहक आभूषणों की बुकिंग भी कर रहे हैं। सराफा व्यापारी विनीत गुप्ता के अनुसार, इस बार सराफा बाजार चमक उठा है। दीपावली और धनतेरस के त्योहारी को देखते हुए ग्राहक सोने-चांदी के मनपसंद आभूषण खरीद रहे हैं। कई ग्राहक परिवार में बेटे-बेटियों के विवाह के लिए भी आभूषणों को खरीद रहे

अद्भुत: छात्रा के शरीर पर उभर रहे राम और राधे के नाम

लोक पहल

हरदोई। इसे अद्भुत और ईष्वर का चमत्कार ही कहा जायेगा एक आठ साल की बालिका के शरीर पर राम और राधे नाम के शब्द स्वत: उभर रहे हैं। यह घटना क्षेत्र में चर्चा का विषय बनी हुई है। हरदोई जिले के माधौगंज कोतवाली क्षेत्र में कक्षा एक की छात्रा के शरीर के अलग-अलग हिस्सों पर राम और राधे नाम के शब्द उभर आए। यह सिलसिला पिछले कई दिनों से चल रहा है और चिकित्सक भी कुछ नहीं बता पा रहे हैं।

सहिजना निवासी देवेंद्र राठौर की पुत्री साक्षी (8) माधौगंज कस्बे के एक प्राइवेट विद्यालय में कक्षा एक की छात्रा है। उसके शरीर पर राधे-राधे, राम-राम, गुरुदेव सहित उसका व परिवार के लोगों के नाम और अंक उभर रहे हैं। देवेंद्र के मुताबिक, पिछले 2 दिनों से साक्षी अपने शरीर पर लाइनें बनाती थी, जो खरोंच जैसी लगती थीं।

अब इनमें नाम उभरने लगे हैं। देवेंद्र का दावा है कि उन्होंने साक्षी को हरदोई के कई चिकित्सकों और प्राइवेट नर्सिंग होम में भी दिखाया, लेकिन चिकित्सक कुछ नहीं बता पाए। स्कूल में साक्षी के शरीर पर राम, राधे व उसका नाम और कई अन्य अक्षर अलग-अलग जगहों पर उभर आए।

हालांकि लगभग 15 मिनट बाद उन्हीं जगहों पर त्वचा सामान्य हो गई। साक्षी को किसी तरह का दर्द अथवा खुजली या अन्य कोई परेशानी भी नहीं है। सीएचसी अधीक्षक डॉ. संजय का कहना है कि त्वचा संबंधी बीमारी हो सकती है, लेकिन बिना विस्तृत जांच के कुछ भी नहीं कहा जा सकता।

राज्य कर्मचारियों को योगी का दीवाली गिफ्ट

डीए में बढ़ोत्तरी के साथ बोनस का भी ऐलान

लोक पहल

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने प्रदेश के कर्मचारियों को दीपावली का गिफ्ट दिया है। कर्मचारियों को महंगाई भत्ते में बढ़ोत्तरी के साथ एक माह का वेतन बोनस के रूप में भी मिलेगा। प्रदेश के 16.35 लाख राज्य कर्मचारियों, शिक्षकों व शिक्षणेत्तर कर्मचारियों को पहली जुलाई 2023 से मूल वेतन के 46 प्रतिशत की दर से महंगाई भत्ता (डीए) मिलेगा। वहीं, 14.82 लाख अराजपत्रित राज्य कर्मचारियों, शिक्षकों और शिक्षणेत्तर कर्मचारियों को 30 दिनों के वेतन के बराबर बोनस दिया जाएगा। कर्मचारियों को बढ़ी दर से डीए और अराजपत्रित कर्मियों को बोनस देने के वित्त विभाग के प्रस्ताव को मंजूरी देते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोषल मीडिया पर राज्य सरकार के इस निर्णय की जानकारी दी।

बढ़े डीए का लाभ राज्य सरकार, सहायताप्राप्त शिक्षण व प्राविधिक शिक्षण संस्थानों और शहरी स्थानीय निकायों के सभी नियमित व पूर्णकालिक कर्मचारियों, कार्य प्रभारित कर्मचारियों और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग वेतनमानों में कार्यरत पदधारकों को मिलेगा। उन्हें अभी तक मूल वेतन के 42 प्रतिशत की दर से डीए मिल रहा था।

पहली जुलाई से से 31 अक्टूबर तक बढ़े डीए की धनराशि कर्मचारियों के भविष्य निधि खाते (जीपीएफ) में जमा होगी। कर्मचारियों को नवंबर के वेतन के साथ दिसंबर में डीए का नकद भुगतान किया जाएगा। राज्य कर्मचारियों को बढ़ी दर से डीए का भुगतान करने पर राज्य सरकार पर हर महीने 215 करोड़ रुपये का अतिरिक्त व्ययभार आएगा।

शहर का उभरता बिजनेस हब आश्रम बाजार

सुयश सिन्हा

शाहजहांपुर। दीपावली, भारत में मनाए जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है। उत्तर भारत में दीपावली एक प्रमुख त्योहार है।दीपावली का यह उत्सव अद्भुत, अलौकिक और अद्वितीय छटा बिखेरता है। दीपावली का उत्सव पांच दिनों तक मनाया जाता है जो धनतेरस से शुरु होकर भाई दूज तक चलता है।

शाहजहांपुर शहर में सदर बाजार, चौक, घंटाघर, गोविन्द गंज, बहादुर गंज आदि बाजार दीपावली पर अपनी पूरी साज सज्जा के साथ सजधजकर तैयार हो जाते हैं और यहाँ लाखों की संख्या में लोग दीपावली पर खरीदारी करते हैं। जैसे जैसे शहर का फैलाव हुआ तो नयी कालोनियां विकसित हुई। शहर के दक्षिणी छोर पर आवास विकास कालोनी, साउथ सिटी, मेगासिटी, वृंदावन कालोनी,जैसी बड़ी कालोनियों के साथ छोटे छोटे अन्य आवासीय परिसर भी विकसित हुए। साथ ही मेडीकल कालेज, के.आर. पेपर, विद्या प्लाई, जैसी बड़ी फैक्ट्री के सैकड़ों कर्मचारी इसी क्षेत्र में रहने लगे। इसी कारण शहर के परंपरागत बाजारों से हटकर एक नये बाजार की जरूरत शहरवासियों को महसूस हुई। लोगों की इस जररुरत को ध्यान में रखकर मुमुक्षु आश्रम के अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानंद ने आश्रम परिसर में एक अत्य आधुनिक बाजार विकसित करने का बीड़ा उठाया। करीब दो वर्ष के अल्प समय में आज 55 दुकाने बनकर तैयार हो गई। इस अत्य आधुनिक आश्रम बाजार में आज सभी दुकानों में ब्रांडेड शोरूम और शहर की परंपरागत दुकानें खुल रही है। यहां पर खाने पीने के विभिन्न ब्रांडेड आउटलेट के साथ ही विभिन्न उत्पादों के ब्रांडेड शोरूम से लेकर कपड़ों, रडीमेड गारमेंट, महिलाओं और बच्चों के आधुनिक परिधानों के शोरूम के साथ ही इलेक्ट्रॉनिक, इलेक्ट्रक, ई-स्कूटी, फर्नीचर, दवाओं, आदि के भव्य शोरुम खुल चुके हैं। आश्रम बाजार में जहाँ एक ओर साफ सफाई का विशेष ध्यान रखा जाता है वही ग्राहकों के पार्किंग की भी बेहतर व्यवस्था की गई है। यहां आपको जहां वनवाईट ब्रांड के बर्गर, स्नैक्स, पिज्जा, रैप आदि मिलेंगे वहीं पतंजलि मेगा स्टोर पर बाबा रामदेव की दवाईयों के साथ साथ किराना स्नैक्स, ड्राइफूट और पूजन सामग्री उपलब्ध है। आश्रम बाजार में 'अत्तारी' के शोरूम में ब्रांडेड फर्नीचर उपलब्ध है जहां पर दीवाली पर विशेष छूट दी जा रही है। शहर की मिठाईयों का एक ख्यातिलब्ध प्रतिष्ठान आर्य मिष्ठान भंडार में विभिन्न प्रकार की मिठाईयों के साथ-साथ

ड्राइफू ट, गिफ्टपैक भी उपलब्ध है। शहर की कपड़ों की पुरानी दुकान खन्ना ब्रदर्स एण्ड सन्स पर साड़ी, लहंगा, सूट, पैन्ट शर्ट, कंबल आदि उचित दामों पर उपलब्ध है। मेन्स एण्ड वूमेन वियर के ब्रांडेड शोरूम 'ड्यूक' पर सभी तरह के गारमेन्ट्स ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित कर रहे है। कन्फैक्शनरी के क्षेत्र में देश में एक सम्मानजनक ब्रांड 'टेम्पटेशन' शोरूम में सभी तरह के केक, पेस्ट्री, स्नैक्स, पैटीज, चाकलेट, वैफर्स, गिफ्ट पैक, दिवाली पर विशेष रूप से उपलब्ध है। एसके ट्रेडर्स में सैमसंग, एलजी, वर्लपूल, वोल्टास, हिटाची जैसे ब्रांडेड इलेक्ट्रानिक कम्पनियों के आइटम एसी, कूलर, फ्रिज, टीवी, वाशिंग मशीन उपलब्ध है। यहां पर दिवाली के अवसर पर ई-स्कूटी के साथ 32 इंच का एलईडी मुफ्त दिया जा रहा है। इसी तरह आश्रम बाजार में अंडरगारमेन्ट्स का प्रतिष्ठित ब्रांड 'रूपा' में अंडरगारमेन्ट्स के साथ-साथ लेडीज सूट और साड़ी भी उपलब्ध है। यहां पर ई-स्कूट भी बाजार से कम दामो पर उपलब्ध है।

'ज्ञान इलेक्ट्रिकल्स' में बिजली के घरेलू उत्पादों के साथ-साथ स्विच व तार उचित मूल्य पर उपलब्ध है। 'श्री स्टोर' पर महिलाओं उच्च क्वालिटी के परिधान उपलब्ध है। दीवाली पर यहां विशेष छूट का लाभ उठाया जा सकता है। वन-9 क्यूसिन में पिज्जा, बर्गर का आनन्द लेने से आप अपने आपको रोक नहीं पाएंगे। 'खादिम' ब्रांड के शोरूम में विभिन्न प्रकार के जूते चप्पल उपलब्ध है। आश्रम बाजार में अनुज कपूर के सौजन्य से किराये पर ई-स्कूटी भी प्राप्त कर सकते है। इसी तरह जल्द ही आश्रम बाजार में रेमंड्स, आरके लाईट, वार्सीलोना, रॉग्न, एचपी, विनीत ज्वैलर्स, प्रतीक हैण्डलूम, विनीत टीवीएस आदि के विशाल शोरूम जल्द ही खुलने जा रहे है।

एसएस कालेज में एम.एससी. भौतिकी प्रथम सेमेस्टर का परिणाम रहा शत प्रतिशत

शाहजहांपुर (लोक पहल)। एम.जे.पी. रूहेलखंड विश्वविद्यालय के द्वारा एम.एससी. (भौतिकी) प्रथम सेमेस्टर का परीक्षा परिणाम घोषित कर दिया गया। स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय का एम.एससी. प्रथम सेमेस्टर का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा। विभागाध्यक्ष डॉ शिशिर शुक्ला ने बताया कि प्रथम सेमेस्टर में कुल 26 विद्यार्थी पंजीकृत थे। सभी विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए हैं। विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ सत्येंद्र कुमार सिंह ने बताया कि 8.81 एस.जी.पी.ए. के साथ अजय प्रताप सिंह प्रथम स्थान पर रहे। 8.62 एस.जी.पी.ए. के साथ सौम्या पाल एवं पलक ग्रोवर संयुक्त रूप से द्वितीय स्थान पर रहीं तथा 8.42 एस.जी.पी.ए. के साथ एकता सैनी एवं मृणाल तिवारी संयुक्त रूप से तृतीय स्थान पर रहीं।

विद्यार्थियों की इस सफलता पर मुमुक्षु शिक्षा संकुल के मुख्य अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती, सचिव डॉ अवनीश मिश्र, प्राचार्य डॉ आर के आजाद, उपप्राचार्य डॉ अनुराग अग्रवाल, एवं विज्ञान संकाय के सह संकायाध्यक्ष डॉ आलोक सिंह ने शुभकामनाएं दी है। भौतिक विज्ञान विभाग के नितिन शुक्ला, राजनंदन सिंह राजपूत, प्रशांत शर्मा, सुधाकर गुप्ता आदि ने भी विद्यार्थियों को उनकी सफलता पर बधाई दी।

डॉ0 सुदामा प्रसाद विद्यास्थली में स्पोटर्स मीट का शुभारम्भ

शाहजहांपुर (लोक पहल)। डॉ सुदामा प्रसाद विद्यास्थली में स्पोटर्स मीट का उद्घाटन प्रबन्धक संजय कुमार गुप्ता एवं वरिष्ठ सदस्य आफाक अली, विद्यालय की प्रधानाचार्या उज्जवल मिश्रा और उपप्रधानाचार्या डॉ ज्योत्सना द्विवेदी ने माँ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रजज्वलित कर एवं रंग बिरंगे गुब्बारों उड़ाकर किया।

कार्यक्रम का प्रारम्भ शिक्षिका अंकिता गुप्ता द्वारा स्वागत गीत से किया गया। शालिनी अग्निहोत्री एवं हेड ब्वाय आयुष बाजपेयी, हेड गर्ल प्रगति मिश्रा के संयुक्त संचालन में हुए कार्यक्रम में प्रबंधक महोदय ने अपने शब्दों में सभी बच्चों को बढ़-चढ़ कर प्रतिभाग करने के लिए प्रेरित किया। प्रधानाचार्या उज्जवल मिश्रा ने आभार व्यक्त किया। व्यायाम शिक्षक पंकज सक्सेना, महजबी मन्सूरी एवं वन्दना सैनी के संयुक्त नेतृत्व में 5 मीटर रेस, टॉफी रेस, म्यूजिकल चेयर, बुक बैलेन्स एवं खो-खो में अनेक छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। अभिषेक सक्सेना, दिव्यांश मिश्रा, चेतना अवस्थी, सलमान अहमद खान, शैलजा मिश्रा, अनीता त्रिवेदी, रूचिर शर्मा, राहुल दीक्षित, संदीप तिवारी आदि का विषेष सहयोग रहा।

लक्ष्मीपूजा

लघुकथा

टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'
बालोद (छत्तीसगढ़)

धनतेरस का दिन था। कार्तिक मास की काली रातों ने सच में रंजन के घर-परिवार को ढँक लिया था। रंजन की पत्नी छः-सात माह से डायलिसिस पर थी। पूरे परिवार की हालत खराब थी। फिर आज तो मालती की कंडीशन कुछ और ज्यादा ही क्रिटिकल हो गयी। वह बार-बार करवटें बदल रही थी। 'ऋषभ के पापा ! मेरी सेवा तो कर रहे हो जी। मेरे जाने के बाद तुम्हारा क्या होगा 'सोच कर तुम्हारे लिए मुझे बहुत दुख होता है जी।' मालती रंजन के हाथ को अपने हाथों में लेते हुए बोली। 'चुप रहो ना मालती। कैसी बात करती हो ? अरी पगली, सीता के बिना तो राम की मूर्ति अधूरी होती है। फिर तो मैं...' रंजन ने मालती के बालों पर उंगलियाँ फेरते हुए कहा। 'सो जाओ ना अब जी, मेरे लिए कितनी रातें जागोगे ?' मालती ने अपनी आँखें मूँद लीय

और अपना सर रंजन की दाई जांघ पर पर रख लिया। 'ठीक है...' कहते हुए रंजन मालती के सिरहाने पर बैठे दीवार पर टिक गये। कितने समय उनकी नींद लगी, उन्हें पता नहीं चला। जब उनकी नींद खुली तो देखा मालती की साँसें थम चुकी थी। उन्होंने रात को किसी को कुछ बताना उचित नहीं समझा। सुबह दस बजे मालती की अर्थी उठी। श्मशान भूमि में उठती चिता की लाल-पीली लपटें रंजन को मालती की गौरवर्ण देह पर लिपटी साड़ी के पल्लू की याद दिला रही थी। त्यौहार होने के कारण सामाजिक नियमों के चलते आज एक ही दिन में संपूर्ण शोक कार्यक्रम संपन्न हुआ। दूसरे दिन शाम को रंजन के तीनों बेटे ऋषभ, सौरव, पूर्वेश व बहुएँ रंजन के करीब आये बोले- 'पापा जी ! चलिए ना, पूजा की तैयारी हो चुकी है। लक्ष्मीपूजा करेंगे अब।' रंजन की तरह तन्द्रा भंग हुई। रंजन की आँसुओं के दरिया में हंस सरीखी आँखें तैर रही थी। बोले- 'घर में लक्ष्मी ही नहीं रही, फिर लक्ष्मी पूजा का क्या मतलब...?' वे आगे कुछ और कह ही रहे थे कि तीनों बेटे रंजन की छाती से लिपट गये।

दीपावली

दीप जलाओ ,दीप जलाओ
आज दीवाली आई है।
घर का कोना, कोना को
तुम रोशन मत कर लेना
दिल के कोना को भी
तुम रोशन कर लेना।
दीप जलाओ, दीप जलाओ
आज दीवाली आई है

मन मंदिर में भी एक दीप जलाओ
आज दीवाली आई है।
बुराई की नही ये अच्छाई की
प्रतीक है दीपक,
जाने कितने इसमें भेद छुपा।
जब अयोध्या को लौटे श्री राम जी
सीता संग किया गृह प्रवेश
लंकेश को हराकर जीत हासिल की
बुराई को मिटाकर, अच्छाई की जीत
सिापित की, तब अयोधावासी ने
घर घर दीप जलाकर की है
इसका शुभ आरंभ, ओर किया है
सीता मैया और राम जी का स्वागत।
दीप जलाओ, दीप जलाओ
आज दीवाली आई है

लक्ष्मी गणेश की होती है इसमें पूजन
कुबेर का भंडार, भरता है इसमें
जितनी करोगे तुम साफसफाई
देवी देवता का होगा उतना आगमन
दीप जलाओ, दीप जलाओ
आज दीवाली आई है।

घर का कोना को तुम
रोशन मत कर लेना
दिल के कोना को भी
तुम रोशन कर लेना।
दीप जलाओ, दीप जलाओ
आज दीवाली आई है।

रीना सोनालिका
बोकारो झारखंड

दीप पर्व पर रंगोली के शुभ रंग

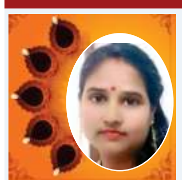

रेखा शाह आरबी
बलिया उ.प्र.

हिंदू वर्ग के अधिकतर व्रत त्योहार और पूजा में अल्पना या रंगोली बनाई जाती है धार्मिक सामाजिक अवसरों पर बनने वाली यह लोक कला लगभग 5000 वर्ष से बनाई जा रही है।

पूर्व में यह पूरी तरह हस्तकला थी अब यद्यपि इसमें आधुनिक मशीनों का भी प्रयोग करके रंगोली बनाई जाती है लेकिन पहले घरों में महिलाएं गेरू, चूने से फूल पत्ती डिजाइन बनाती थी। अल्पना या रंगोली देश के अलग-अलग हिस्सों में अलग-अलग नाम है और अलग उनकी शैली भले हो लेकिन उसके पीछे की भावनाएं या निहितार्थ समान होते हैं।

अब तो बाजार में रंगोली के बने बने डिजाइन मिलते हैं बस घर पर लाकर उन में रंग भर देना रहता है और आपकी रंगोली तैयार हो जाती है। लेकिन पूर्व में ऐसा नहीं था यह पूरी तरह हस्तकला थी और महिलाएं भांति -भांति के इससे चित्र और अल्पना, रंगोली अपनी पसंद अनुसार बनाती थी गांव की महिलाएं अभी भी व्रत त्योहार पर बनाती रहती हैं। दिवाली पर रंगोली बिना सब कुछ अधूरा अधूरा लगता है मुख्य द्वार पर बनने वाली रंगोली दीयो के प्रकाश में एक अद्भुत, मनोहरी, मनोरम दृश्य उत्पन्न करती है रंगोली का भी संबंध हमारे पौराणिक ग्रंथ रामायण से है जब भगवान राम वनवास पूरा करके अयोध्या लौटे थे तो अयोध्या वासी बड़े ही प्रसन्न थे पूरी अयोध्या की साफसफाई करते हुए साज सज्जा के साथ अयोध्या के मुख्य द्वार पर रंगोली बनाएं.. इस तरह दिवाली पर रंगोली बनाने का प्रचलन प्रारंभ हुआ। सुख समृद्धि और सौभाग्य का प्रतीक रंगोली विशेष अवसरों पर ही बनाने का प्रचलन है धन की देवी मां लक्ष्मी का स्वागत करने के लिए रंगोली बनाना अत्यंत शुभ मान कर लोग बनाते हैं।

दक्षिण भारत में जब रंगोली बनाई जाती है तो उसे कोल्लम का नाम दे दिया जाता है वही रंगोली जब राजस्थान में बनाई जाती है तो उसे मांडना के नाम से दीवारों की शोभा बना दी जाती है । और जब कोलकाता में बनाई जाती है तो उसे अल्पना का नाम दिया जाता है। और जब महाराष्ट्र में दीपों के संग जगमगाती है तो उसे रंगोली का नाम दे दिया जाता है और इस रंगोली को उत्तर प्रदेश में चौक पूरना कह लेते हैं तो बगल में बसे बिहार में अरिपन का नाम दे दिया जाता है। जो चावल के आटे या आटे के घोल में हल्दी मिक्स करके बनाई जाती है। शैली अलग भले ही हो जाती है लेकिन यह एक चीज सब जगह समान रहती है कि यह शुभ अवसरों पर बनाई जाती है।

वैसे तो जितने लोग उतने प्रकार के रंगोली के डिजाइन बनाते हैं लेकिन सांकेतिक वृत्त वाली रंगोली डिजाइन सबसे आम डिजाइन है जिसका उपयोग लोग आमतौर पर करते हैं अलग-अलग रंग से वृत्त को भरकर सुंदर सी डिजाइन बनाकर महीन रेखाओं से बने पैटर्न सुंदर डिजाइन बना लिए जाते हैं।

माटी के दीप जलें

माटी के दीप जलें,
जलें धरा पर वे अविरल,
अंतर का कलुष हरें।

जगमग- जगमग आई दिवाली,
कन- कन में फैली उजियाली।
भरें प्रेम को मन मानस में,
ऐसे दीप जलें।
माटी के दीप जलें।

कहीं कोई भूखा सोए,
कहीं व्यंजन ढेर लगे।
कहीं खुशी का पार नहीं,
तो कहीं दुखों के ढेर लगे।
मिटे विषमता जग से सारी,
जब समता के सुमन खिलें।
माटी के दीप जलें।

युगों से जलते आए हैं पर,
नहीं मिटा है अंधियारा।
अरमानों की आग सुलगती,
औश् बहती नयनों से धारा।
मिटे अभावों की कालिख तब,
जब तारों से दीप जलें।
माटी के दीप जलें।

त्याग, प्रेम औश् मानवता का
भाव जगे जब जन के मन में।
स्वार्थ, अहम का भाव रहे न
लेशमात्र मानव के मन में।
मिट जाए सब अंधियारा,
जब ज्ञान के दीप जलें।
माटी के दीप जलें।

सारे जग में हो उजियारा
अंधियारा सब मिट जाए।
रहें सभी जन एक भाव से
भेद भाव जब मिट जाएं।
आलोकित हो उठे भुवन
खुशियों के दीप जलें।
माटी के दीप जलें।

पंकज मिश्र 'अटल'
आसाम

ज्योति कलश उतार दें

जलता जब नन्हा दीपक,
आँगन का तम हरता।

जगमग-सी द्वार-देहरी,
बिखरी सुहावन छटा।
चितवन जब करें श्रृंगार,
अंतर्मन विहँस घटा।
पथ में है यह तिमिर घना,
भीतर उजास भरता।

सूरज से लें ज्योति कलश,
धरती पर उतार दें।
अंधेरा ना रहे शेष,
दीपधन उपहार दें।
मधुर-मधुर ऐ दीपक जल,
धरा से तमस छटता।

जो यहाँ उदास चेहरे,
हम उन्हें मुस्कान दें।
ना उम्मीद जिंदगी को,
आशा का जहान दें।
शेष है आस का दीपक,
तिमिर सदा कब रहता।

नलिन खोईवाल
इंदौर

दीवाली तो आयी लेकिन...

दीवाली तो आयी लेकिन,
कब अँधियारा दूर हुआ !

रौब जमाती झालर आयी,
बैठी है मुंडेर डटकर,
दीयों को औकात बताती
उनकी ही आभा चटकर,

देहरी के दीपों पर बैठा
ज्वाल-व्याल मगरूर हुआ।

पीली-पीली आभाओं की
हँसी उड़ातीं फुलझड़ियाँ,
आतिशबाजी है बेकाबू,
खैर मनातीं झोपड़ियाँ,

मद्धिम लौ भी काँप रही है,
मारुत ही ज्यों क्रूर हुआ।

दीपक दम-भर जला खेत में
लछमी का आशीष मिले,
कंठ बखारी का भर जाए,
कृषकों का मुख मलिन खिले,

लेकिन मावस छँटी नहीं,
हर सपना चकनाचूर हुआ।

राजेन्द्र वर्मा
लखनऊ

तमसो मा ज्योतिर्गमय

अजीत यादव शाहजहांपुर

असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मामृतं गमय बृहदारण्यकोपनिषद् का यह सदवाक्य कहता है कि मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो।मुझे अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो।मुझे मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो। प्रकाश सदा से ही भारतीय चिंतन का धेय्य वाक्य रहा है। प्रकाश अस्तित्व की मूल अभिव्यक्ति है। तत्ववेत्ता ऋषियों ने प्रकाश की इस उपासना को ही विविध रूपों में प्रकट किया है । फिर चाहें वह सूर्य को अर्घ देना हो, मन्दिर में प्रज्वलित दीप हो आदि। यह व्यवस्था विश्व के अनेक धर्मों में किसी न किसी रूप में निश्चित ही प्राप्त होती है। भारतवर्ष में मनाए जाने वाले सभी पर्वों में दीपावली का सामाजिक और धार्मिक दृष्टि से अत्यधिक महत्त्व है।

माना जाता है कि दीपावली के दिन अयोध्या नरेश प्रभु श्री राम अपने चौदह वर्ष के वनवास के पश्चात अयोध्या लौटे थे।अयोध्यावासियों का हृदय अपने परम प्रिय राजा के आगमन से प्रफुल्लित हो उठा था। श्री राम के स्वागत में अयोध्यावासियों ने घी के दीपक जलाए। कार्तिक मास की सघन काली अमावस्या की वह रात्रि दीपों के रोशनी से जगमगा उठी। तब से आज तक भारतीय प्रति वर्ष यह प्रकाश-पर्व हर्ष व उल्लास के साथ मनाते हैं। इतना ही नही इसी दिन से जुड़ी कुछ अन्य कथाएँ भी हैं।

महाभारत काल में कौरवों ने, शकुनी मामा की मदद से शतरंज के खेल में पांडवों को हराकर छलपूर्वक उनका सब कुछ ले लिया और उन्हें राज्य छोड़कर तेरह वर्ष के लिए वनवास जाना पड़ा। कार्तिक अमावस्या को पांडवों (युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव) वनवास पूरा कर अपने राज्य

लौटे। उनके लौटने की खुशी में राज्य के लोगों नें दीप जलाए। माना जाता है कि तभी से कार्तिक अमावस्या को दीपावली मनाई जाती है। एक और पौराणिक मान्यता है कि इसी दिन समुद्र मंथन के दौरान मां लक्ष्मी जी ने अवतार लिया था। मां लक्ष्मी को धन और समृद्धि की देवी माना जाता है। इसलिए हर घर में दीप जलने के साथ-साथ हम माता लक्ष्मी जी की पूजा भी करते हैं।

इसी दिन से जुड़ी एक और सुंदर कथा आती है। कहा जाता है कि इसी दिन भगवान श्रीकृष्ण ने नरकासुर राक्षस का वध किया था। नरकासुर उस समय प्रागज्योतिषपुर का राजा था। वह इतना क्रूर था कि उसने देवमाता अदिति की बालियां छीन ली। देवमाता अदिति श्रीकृष्ण की पत्नी सत्यभामा की संबंधी थीं। श्रीकृष्ण की मदद से सत्यभामा ने नरकासुर का वध किया था। यह भी दीपावली मनाने का एक प्रमुख कारण बताया जाता है।

संयोग से ये सभी कथाएँ कार्तिक अमावस्या से जुड़ी हैं। इनमे एक बात समान है वह यह कि नकारात्मक अर्थात अधर्म के मार्ग पर चलने वाले आसुरी शक्तियों से परिपूर्ण दैत्यों के वध ही प्रकाश की विजय है। वास्तव में सत्य ही अजेय है, सनातन है, शाश्वत अथवा सार्वभौमिक है।आध्यत्मिक द्रष्टिकोण से प्रकाश का विशेष महत्व है। प्रज्वलित दीप आत्म ऊर्जा का प्रतीक है। यही अन्तस् चेतना की तेजस्विता की प्रखरता के नव आलोक की दिव्य उद्घोषणा है। अमावस्या की सघन काली रात ही अविद्या अथवा अज्ञान है। राम और कृष्ण परम् ज्ञान की ज्योति हैं जो कण कण को दिव्यता प्रदान करते हैं। लक्ष्मी ही प्राकृतिक वैभव है। जो दिग्दिगन्त की सकल संवृद्धि का पवित्र प्रतीक है।जिसकी पूजा अथवा उपासना के लिए हम सब अपने अपने आवास और निवास को स्वच्छ और सुंदर बनाते हैं। यदि हम सब अपने मन मस्तिष्क को भी इतना ही स्वच्छ रख सकें तो निर्मलता ,पवित्रता और दिव्यता के घटित होने में पल भर का समय भी नही लगेगा। नकारात्मक ऊर्जा को नष्ट करने की सामर्थ्य राम और कृष्ण हैं। राम और कृष्ण हमारे विचारों और भावनाओं में यदि निवास करने लगें तो हर दिन दीपोत्सव ही होगा और फिर सघन अमावस्या की काली रात दिव्यता से विभूषित हो उठेगी।

बहुत जल्द आश्रम बाजार में
22 कैरेट हॉलमार्क शोरूम
विनीत ज्वैलर्स
अत्याधुनिक आभूषणों का प्रसिद्ध प्रतिष्ठान

सोने, चांदी व हीरे के आभूषण
विनीत गुप्ता
मो. 9794719070
वेदांश गुप्ता
मो. 9335510137
शॉप नं0 47/48 आश्रम बाजार, बरेली मोड़, शाहजहांपुर

Open Shortly

RAJIV VASTRA LOK
Suiting shirtings& Readymade Garments
Festive & Wedding Collection
Blazzers, Bundis & Waiscoats
Akshat Agarwal
Raymond
Rajiv Mohan Agarwal
Mob. 9368589639
Shop No.41/42 Ashram bazar Bareilly More, Shahjahanpur
Sister Concern-Rajiv Vastra Lok Chowk & Raymond Store in Townhall SPN

बहुत जल्द आश्रम बाजार में
Prateek Handloom

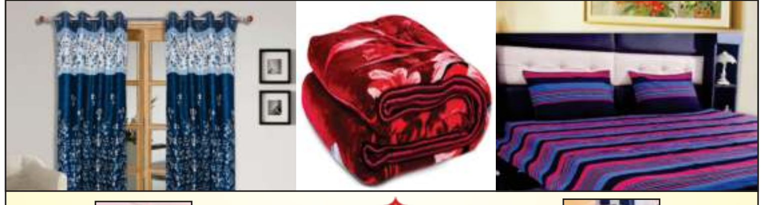

Jitendra Kumar Rastogi
Mob. 9838582811
Prateek Rastogi
Mob. 6386272732
Shop No. 46 Ashram bazar Bareilly More, Shahjahanpur
Sister Concern-Harsh Jwellers Jalalanagar SPN

TVS
वनीत टीवीएस
दीवाली पर विशेष ऑफर का लाभ उठाएं
सभी प्रकार के वाहनों पर लोन न्यूनतम ब्याज पर लोन सुविधा उपलब्ध

मदन गोपाल सूद
मो. 7510003444
9415035445
शॉप नं0 30 आश्रम बाजार, बरेली मोड़, शाहजहांपुर

बहुत जल्द आश्रम बाजार में
R.K. Electricals
A.C., Coller, Fan & All Electrical Appliances
Shop No. 45 Ashram bazar Bareilly More, Shahjahanpur
Sister Concern-R.K. Electrical infront of Kannaujia Hospital SPN
V-GUARD
Rakesh Kumar Dubey
Mob. 7652063264

फिर मन में अंधियारा क्यों

दीपो का त्यौहार है आया हर तरफउजियारा है
जगमगा रहा गली मोहल्ला फिर मन में क्यों अंधियारा है
द्वार रंगोली से सजी हैं,जल रही है फुलझड़ी
मुँह मीठा कराते फिरते,पर मन क्यों सबका खारा है
बन रहे पकवान घर घर, बाजारो में भी रौनक छाई है
कोनें बैठे गरीब सोचें, क्यों वो किस्मत का मारा है
लक्ष्मी सी हर नारी दिखती, सुंदर पहने परिधान है
पहले जैसी अब कहाँ पूजा अर्चना,रील्स बनाने में सबका रूझान है
करते अपनेपन का दिखावा, गले सबको लगाते हैं
बेशक दुनियाँ से जीत गये हैं पर अपनों से ही हारे हैं...!!

सरिता श्रीवास्तव 'सृजन'
अनूपपुर, एमपी

अंधकार पर प्रकाश की और अज्ञान पर ज्ञान की विजय का प्रतीक दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ

पूज्य स्वामी शुकदेवानन्द महाराज जी की प्रेरणा से जनपद के शैक्षणिक पिछड़ेपन को दूर करने तथा जनपद में उच्च शिक्षा की अलख जगाने के उद्देश्य से ०8 मार्च 1964 को स्वामी शुकदेवानन्द कालेज की स्थापना हुई। महाविद्यालय में सत्रारम्भ 1965 में बीएस प्रथम वर्ष की कक्षाओं से हुआ। उसके बाद महाविद्यालय निरन्तर प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होता रहा। स्वामी चिन्मयानन्द जी महाराज की प्रेरणा से वर्ष 1993 में एमएड, एमकाम की कक्षाएं प्रारम्भ हुई। वर्ष 2००3 में महाविद्यालय परिसर में श्री शुकदेवानन्द प्रेक्षागृह, सेमिनार कक्ष, मनोविज्ञान प्रयोगशाला, वर्ष 2००4 में एक इंडोर स्टेडियम का लोकार्पण क्रमशः तत्कालीन महामहिम राज्यपाल विष्णुकांत शास्त्री एवं तत्कालीन सांसद एवं वर्तमान में उप्र के यषस्वी मुख्यमंत्री माननीय योगी आदित्यनाथ द्वारा किया गया। वर्ष 2००9-1० में स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती द्वारा जनपद के छात्र-छात्राओं के हितों को ध्यान में रखकर विभिन्न विषयों यथा गृहविज्ञान, चित्रकला, संगीत, इतिहास, शिक्षाशास्त्र, डीएलएड एवं वर्ष 2०15-16 में सात विषयों में एमए तथा पांच विषयों में एमएससी की कक्षाएं प्रारंभ की गई। स्वामी जी का यह कदम जनपद के छात्र-छात्राओं को उपकृत्य करने वाला था क्योंकि इससे पूर्व यहां के अनेक बच्चे स्नातकोत्तर की शिक्षा प्राप्त करने के लिए दूसरे जिलों में जाने के लिए बाध्य होते थे। महाविद्यालय में वर्तमान में सात हजार से अधिक की छात्र संख्या तथा 2 से अधिक षिक्षक अध्ययन अध्यापन के कार्य में रत है। महाविद्यालय अपने व्याख्यान मालाओं, राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों, सामुदायिक सहयोग के कार्यो हेतु नित्य नए आयाम स्थापित कर रहा है।

डा. अवनीश कुमार मिश्रा
सचिव

स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती
अध्यक्ष, प्रबंध समिति

प्रो. डा. आर.के. आजाद
प्राचार्य

मीरा जैन उज्जैन

लक्ष्मी-वास

लघुकथा

दीपावली की शाम उल्लू पर सवार सैकड़ों घरों के अवलोकन के पश्चात भी लक्ष्मी जी को निवास के लिए अनुकूल स्थान नहीं मिल पाया था भ्रमण के दौरान एक घर के अंदर हो रहा शोरगुल सुन उल्लू वही ठिठक गया और वहां का परिदृश्य देख अति उत्साहित हो बोला– 'हे मैया लक्ष्मी ! आखिर मिल ही गया आपको आपका ठिकाना, देखिए आपके प्रति इस घर के लोगों में कितनी श्रद्धा है गृहलक्ष्मी द्वारा आप की चांदी की मूर्ति को मखमली आसन पर विराजित करते हुए थोड़ी सी लुढ़क क्या गई पूरा परिवार उद्वेलित हो उसे कितनी खरी खोटी सुना रहा है एक का तो हाथ ही उठ गया इतनी भाव भक्ति और आस्था आप को अन्यत्र कहीं भी नहीं मिलेगी 'लक्ष्मी जी ने कहा –'आगे चलो' उल्लू अवाक् सा आगे चल पड़ा राह में पुन: एक महिला के स्वर में लक्ष्मी जी का नाम सुन उल्लू वहां ठहर

गया शायद काम बन जाए लेकिन वहां का नजारा देख उल्लू चौक गया यहां नजारा ही उल्टा था– 'इसमें इतना घबराने की क्या बात है बहू ! कोई जानबूझकर तो तुमने ऐसा नहीं किया है काम करने वाले हाथों से कभी–कभी धोखा भी हो जाता है तुम चिंता ना करो लक्ष्मी जी के यह तस्वीर टूट गई तो क्या मैं अभी गोपी को भेज कर दूसरी मंगवा लेती हूं तुम पूजा की तैयारी करो 'लक्ष्मी जी को अपनी पीठ से उतरता देख उल्लू अचंभित हो बोला– 'हे मैया ! यहां आपकी तस्वीर टूट कर चकनाचूर हो गई है और उस वृद्धा तो क्या पूरे घर वालों को इसका जरा भी गम नहीं है आप ऐसे अनास्था वाले घर में क्यों प्रवेश कर रही हैं ?' 'तुम्हारा नाम ठीक ही रखा गया है उल्लू ! तुम हमेशा उल्लू ही रहोगे तुम्हें इतना भी नहीं पता जिस घर में स्नेह, वात्सल्य आत्मीयता और शांति का वास होता है वही मेरा निवास होता है इतना कह अंर्तध्यान हो लक्ष्मी जी अदृश्य रूप से उस घर में पदार्पण कर गई।

कैसे दीप जलें

प्रियतम दूर, हृदय व्याकुल है,
कैसे दीप जलें।
जगमग दीवाली के दीपक,
मन को बहुत खलें।

जब तक तुम थे साथ हमारे,
हर दिन था त्यौहार हमारा।
अनुभव किया सदा ही हमने,
हर दीपक में प्यार तुम्हारा।

मुझे बताओ इस विषाद से,
कैसे हम निकलें।

हर दीवाली खुशी खुशी थे,
वन्दनवार सजाए तुमने।
विधि–विधान से पूजन करके,
सारे देव मनाए तुमने।

अंतर्मन के ये अँधियारे,
तुम बिन नहीं झिलें।

आभाहीन लगें ये दीपक,
सूना–सूना सा घर–आँगन।
तुम होते होती दीवाली,
बिना तुम्हारे लगी अपावन।

यादें ही यादें हैं हर पल,
टाले नहीं टलें।

ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान'
शाहजहांपुर

दीपावली

द्वेष भावना तम को मन से करे बाहर
बुझी हुई मन की बाती को,
आज फिर करे रौशन।
ईर्ष्या द्वेष का करके दहन,
मन की ज्योति करें जगमग।
मनाएं दिवाली हम सब मिलकर।

नव दियों से सजाएं ,
धरती अंबर हर घर आंगन।
सभी जगह हो रौशन ही रौशन,
हावी ना हो हम पर रावण।
सभी मिलकर जलाएं दशानन,
मनाएं दिवाली हम सब मिलकर।

मन में कोई गांठ ना रह जाए,
रिश्ता रहे हमारा प्यारा प्यारा।
नेह कि लड़ियो से ,
आज सजाए मन का आँगन।
नेह ज्योति करे जगमग ,
मनाएं दिवाली हम सब मिलकर।

कोना कोना रौशन हो,
अंधियारे की कोई जगह ना हो।
फुलझड़ियो सी हंसी हो ,
नैनो में हो खुशियां ही खुशियां।
नयन ज्योति करे जगमग।
मनाएं दिवाली हम सब मिलकर।

आज करें हम स्वागत राम का,
अपने भीतर बैठे श्याम का।
करे निवारण आज सारे पापों का,
जलाकर एक दीपक प्रेम का,
प्रेम ज्योति करें जगमग ।
मनाएं दिवाली हम सब मिलकर।

मां लक्ष्मी आज द्वार खड़ी है।
सारे द्वार को टटोल रही हैं।
जिस घर जले प्रणय का दीपक।
वह घर वह ढूंढ रही हैं,
प्रणय ज्योति करें जगमग।
मनाएं दिवाली हम सब मिलकर

राजश्री सिन्हा
बुल्गारिया

अमलतास

गीत

लोग कहाँ अब अमलतास हैं!

आकर तुम्हें अमावस फिर क्या
दीपावली सौंप जायेगी?

क्या तारों से भरा गगन फिर
तुम्हें मिलेगा तम घिरने पर?
उठने का बल देगा फिर क्या
कोई खड्ड तुम्हें गिरने पर?

क्या तकलीफतुम्हें फिर सुख की
कोई कली सौंप जायेगी?

इतनी धुन्ध भरी है मन में,
लगता है सब पथ हैं खोये।
चोटों के दरिया में हर दिन
कौन साजिशन हमें डुबोये?

यह दुनिया आखिर में तुमको
घर की गली सौंप जायेगी।

लपटों में हो कोई घर तो
यह न समझना कुएँ पास हैं।
है बेकार ढूँढना मौसम,
लोग कहाँ अब अमलतास हैं!

क्या पहले की तरह उम्र यह
प्रश्नावली सौंप जायेगी?

हम कोई दालान नहीं हैं,
आह चली आये जब चाहे।
खो दी अपनी सड़क जहन ने,
जग ने रचे अजब चौराहे।

सुनो एक दिन तुम्हें जिन्दगी
गंगाजली सौंप जायेगी।

सत्येन्द्र कुमार रघुवंशी
लखनऊ

कविता

यह एक सुखद संस्कार है,
उदय प्रकाश में जगत–संसार है।
साफसफाई में जुट जाते हैं लोग,
खुशियां और सुकून देने में,
सक्षम बन जाते हैं सब यहां,
नहीं यह कहलाता है संयोग।
यहां स्वच्छता सम्मान पाता है,
निर्मल और पवित्र मन में सुकून,
दिलों तक पहुंचने पर एक,
नया इतिहास रचा जाता है।
यह त्योहार है तो सुकून खूब देती है,
प्रतीक बनकर हमेशा सजाकर,
हरेक घर में सजाई जाने वाले,
लोगों को हर्षित कर जाती है।
हर घर –आंगन में खुशियां दौड़ती हुई,
हरक्षण हरपल चलीं आतीं हैं ।
मिठाइयां और सन्देश हर पल,
दिलों दिमाग में अत्यंत उत्साहित मन से,
खुशियों की बरसात ले आतीं हैं।
लक्ष्मी गणेश की पूजा इस त्योहार के,
सबसे उत्तम और आनन्द देने,
सर्वश्रेष्ठ उमंग और उत्साह से,
सनी हुई एक खास व पवित्र संस्कार है।
यह हर–एक सनातनी समाज में,
सबसे पहले दिल से अपनाया जाने वाला,
सबसे उत्तम और विचारशील व्यवहार है।
यहां सांस्कृतिक विरासत को,
आगे बढ़ाने का संकल्प लिया जाता है।
लक्ष्मी गणेश की पूजा करते समय,
पवित्र और निर्मल भावना से,
घर में धन सम्पत्ति और वैभव को,
समेटने का एक अपूर्व प्रयास किया जाता है।

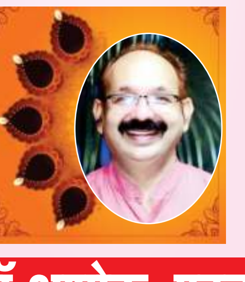

डॉ अशोक, पटना

द्वार खड़ी दीपावली

द्वार खड़ी दीपावली,
दीपक जलते आज।
माता लक्ष्मी की कृपा,
सफल हुआ सब काज।
थाली पूजा की सजी,
खुशी भरी सौगात।
पुष्प बतासा थाल में,
खुशिओं की है रात॥
गणपति लक्ष्मी संग में,
करते जग कल्याण।
भक्ति भाव मन में रखों,
करो मात आह्वान॥
बने पकवान स्वाद का,
चढ़े मातु को भोग।
कर दे माता जब दया,
मिट जाते सब रोग॥
मस्त पर्व दीपावली,
नाच रहा संसार।
रंग बिरंगी रौशनी,
भरा रहे परिवार॥
सच्चाई का जीत है,
गया बुराई हार।
राम लौट कर आ गए,
खुशी खड़ी है द्वार॥

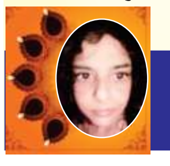

मिठु डे
पं. बंगाल

शरद का हम करें स्वागत

मौसम सजीला हो चला,
आई सुहानी शरद ऋतु ।
अमीय बरसाए 'पूर्णिमा',
सोलह कला से युक्त हो॥

नदी तट सिमट चले,
गगन बदन दमक उठा ।
उड़गन टिमटिमा उठे,
बारात उनकी सज गई ॥

शुभ्र चंद्रिका मादक हुई,
जब बिखेरी रश्मियां।
खीर का स्वाद अनुपम हुआ
जब पड़ गई कुछ चंद्रिका ॥

धूप गुनगुना उठी,
भानु नरम हो चला।
फल वनस्पतियां नवेली
स्वाद भी उनका सरस ॥

उत्सवों का सुखद मौसम
खील मिठाई लुभावनी।
विवाहोत्सव का समा मधुमय
बज रहीं शहनाइयां ॥

गीत मंगल मिलके गाएं,
शरद का हम करें स्वागत।
कोई हो यदि दुखी पीड़ित,
हम सब उसके दुख बटाएं॥

पूर्णिमा बेदार श्रीवास्तव
लखनऊ

अंधेरा बहुत घनेरा है

अंधेरा बहुत घनेरा है
हर घर में विस्तार लिए
दीप जला रौशन करे
उजालों की रफ्तार लिए

भटक रहा है गर्त में क्यूँ
सुक्ष्म ज्ञान के हम लिए
चराचर जगत को भूला
अहं खूद का पाल लिए।

कौन कितना पानी में
बुद्धि–विवेक सब हर लिए
अज्ञान की धरातल पर
हम ही ज्ञानी कह लिए।

है मशहुर जगत ही जाने
क्यों नराधम हम तू पाले
ये बसुंधरा है तपोवन सा
बाहर आ तोड़ मन के जाले।

धन–वैभव हैं पल के धोखे
खोल नयन सच को देखो
फिर कैसी ये आप बडाई
साथ रहो न लड़ो लड़ाई।

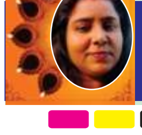

सपना चन्द्रा
भागलपुर बिहार

मेरी धनतेरस

धनतेरस वाले दिन
सुबह सुबह
कालोनी में कबाड़ी आया
और मेरे घर के आगे आते ही
जोर जोर से चिल्लाया
'पुराना कबाड़ बेंच डालो!..'
पत्नी लपक कर बाहर आयी
और कबाड़ी से वोली भइया!
आज तो ये आफिस गये हैं
हो सके तो संडे को आ लो!..'
धनतेरस की शाम
आफिस से लौटा
अस्सी किलो वजनदार पत्नी वोली
बैठिये हम आपके लिये
चाय बनाकर लाते हैं!..
मैंने कहा, 'डार्लिंग! आज
धनतेरस की वर्तन बाजार
जाने का प्रोग्राम बनाते हैं
सुना है बहां पुराने वर्तन के बदले
कुछ पैसे देकर
नये वर्तन मिल जाते हैं!'

दिनेश रस्तोगी–शाहजहाँपुर

इस दिवाली

इस दिवाली क्या बताऊँ
मन कहाँ, जीवन कहाँ है?
एक दीपक जल उठा था
तम भरे मन के महल में।
जगमगाने लग गया था
विश्व भर दो–चार पल में।
आँधियों को किंतु भाया
ही नहीं घर का उजाला,
ढूँढता हूँ आज वो
दीपक कहाँ आँगन कहाँ है।
देहरी सूनी हुई है
द्वार भी रीता हुआ है।
मैं कहीं हारा हुआ हूँ
वो कहीं जीता हुआ है।
एक अंतर्द्वंद पाले
सोचता हूँ मैं अभी तक
हार पाकर मैं कहाँ, वो
जीतकर रौशन कहाँ है?
चाहता हूँ फिर जलाऊँ
दीप हाथों में छिपाकर।
किंतु कोई ले गया है
दीप ही मेरा उठाकर।
आज खुश है चोर लेकिन
देख लेगा जल्द ही वो
पास उसके देर तक
रुकता पराया धन कहाँ है?

अभिषेक ठाकुर 'अधीर'
शाहजहांपुर

/ सम्पादकीय /

आओ दीवाली मनाएँ

दीवाली हिन्दुओं का सबसे बड़ा त्यौहार है। यह त्यौहार प्रत्येक वर्ष बड़ी धूमधाम से भारत के अलग–अलग क्षेत्रों में मनाया जाता है। दीपावली भारत देश के सभी नागरिकों द्वारा बड़ी धूम धाम से मनाया जाने वाला खुशियों भरा त्यौहार है, दीपावली पर हर घर में भगवान गणेश और लक्ष्मी माता जी की पूजा होती है। भारत के निवासी दीवाली के त्यौहार को अन्य देश में रहते हुए भी बड़े धूमधाम से मनाते है। दीपावली का अर्थ दो शब्दों से मिलकर बनी है दीप. आवली जहाँ दीप का अर्थ होता है दीपक और आवली का अर्थ होता है श्रृंखला या रेखाध्पंक्ति। दीपावली शब्द संस्कृत भाषा से लिए गए शब्द है। दिवाली मुख्यत: हिन्दू धर्म के लोगो के द्वारा जाती है। यह हिन्दुओं का सबसे बड़ा त्यौहार है। प्रत्येक वर्ष यह त्यौहार कार्तिक मास को अक्टूबर या नवंबर में मनाया जाता है। दीपावली दीपों का त्यौहार है इस दिन भारत देश में विभिन्न प्रकार की लड़ियों और दीयों ,मोमबतियों से घर को सजाया जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार दिवाली के त्यौहार को मनाये जाने के के पीछे यह तर्क है की जब भगवान् श्री राम 14 वर्ष के वनवास को काटकर और रावण का वध करके अपनी जन्मभूमि अयोध्या की तरफलौटे थे तो उनके अयोध्या लौटने की खुशी में अयोध्या वासियों द्वारा इस दिन घी के दिए जलाये गए थे। उसी दिन से ही दिवाली का यह पवन त्यौहार प्रत्येक वर्ष मनाया जाता है। दिवाली में विभिन्न प्रकार के उपहारों और मिठाइयों को अपने रिश्तेदारों और पड़ोसियों को दिया जाता है और पटाखे जलाये जाते हैं। दिवाली के त्यौहार में भारत में हर घर में रौशनी फैली होती है। दीपावली कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है। दिवाली के शुभ अवसर पर भगवान श्री गणेश और माता लक्ष्मी जी की पूजा की जाती है। यह पूजा धन की प्राप्ति और स्वस्थ जीवन की प्राप्ति के लिए की जाती है। लक्ष्मी जी घर में स्वागत के लिए उस दिन हर घर में रंगोली बनाई जाती है। इस दिन लक्ष्मी जी और भगवान गणेश जी की पूजा अर्चना की जाती है। भारत की कुछ–कुछ जगहों पर दीवाली को नया साल की शुरुआत के रूप में माना जाता है।

इस दिन दीपावली के त्यौहार के अंतिम दिन को भाई दूज त्यौहार के रूप में मनाया जाता है। बहन अपने भाई की कलाई में रक्षा सूत्र बाँधती हैं और तिलक लगाकर उन्हें मिठाई खिलाती है और सभी भाई अपनी बहन को उसकी रक्षा करने का वचन और उपहार देते है। इस दीपावली के त्यौहार को सभी धर्मों के लोगों के द्वारा मिल–जुलकर मनाया जाता है। इस दिन लोग अपने घर के मंदिरों में पूजा पाठ किया करते हैं। एक दूसरे से मिलने उनके घर जाते है बधाइयाँ देते हैं जिससे सामाजिक सद्भावना को बढ़ावा मिलता है। वर्तमान समय में इस भाग दौड़ भरी जिंदगी में जब किसी के पास किसी अन्य व्यक्ति के लिए समय नहीं है तो यही त्यौहार हैं जिसमे आपको मौका मिल पता है एक दूसरे के साथ मिलने का जिससे लोगों में सद्भवना आती है। इस त्यौहार को बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में मनाया जाता है, जब कभी भी दिवाली का त्यौहार आता है तो सभी लोगों में एक उमंग और उत्साह का सञ्चालन होता है। दीपावली के त्यौहार को सभी वर्ग के लोगों जैसे– हिंदू, सिख ,जैन, आदि धर्मों को मानने वाले लोग भी बड़ी धूमधाम से मनाते है। इन सभी धर्मों में दीपावली के दिन ही ऐसी कोई ना कोई ऐसी घटना घटित हुई है, जिसमें बुराई पर अच्छाई की विजय हुई है। दीपावली का त्यौहार पूजा पाठ और बुराई पर अच्छाई की जीत से जुड़ा हुआ है। इसलिए लोग इस पर्व पर अध्यात्म की ओर अग्रसर होते हैं और इससे अच्छे विचारों का उत्थान होता है। एक बार दीवाली का त्यौहार पूरी शान और शौकत के साथ दस्तक दे रहा है दरवाजों पर सजे बंधनवार, दीवारों पर रंग, फर्श पर अद्भुत छटा बिखेरती रंगोली, रंग–बिरंगी झालरों से जगमगाते मकान और अपनी भूमिका निर्वहन करने के लिए आतुर बम, अनार और फुलझड़ियां सभी से यह अपेक्षा कर रही हैं कि दीपावली त्यौहार का यह उत्साह, उमंग और स्नेह दिलों में उमड़ती प्रीत अगले वर्ष तक कायम रहे। साथ ही सभी से यह अपेक्षा भी है कि किसी के घर में अधेरा नजर आये, भूख नजर आये तो उनको भी खुषी मनाने का एक मौका देने की कोषिष करियेगा। हमारी एक छोटी से कोशिश किसी की एक बड़ी मुस्कुराहट की वजह बन सकती है।

बहुत से अंधेरों पर विजय अभी बाकी है

डा. शिशिर शुक्ला
शाहजहांपुर

दीपावली असत्य पर सत्य की एवं अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है। अंधकार का वस्तुतरू कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है, अंधकार तो महज प्रकाश की अनुपस्थिति का दुष्परिणाम है। दीपावली का अर्थ है, दीपों की पंक्तियां। निश्चित है कि जहां दीपों का समूह अर्थात प्रकाश का भंडार विद्यमान होगा वहां से अंधकार खुद ब खुद लुप्त हो जाएगा। सत्य तो यह है कि अंधकार का जन्म भी हमारे ही हाथों में है और उसका विनाश भी हमारे वश में है। प्रतिवर्ष दीपावली यह संदेश देकर जाती है कि हमें प्रकाश को इस तरह फैलाना है कि किसी भी तरह के अंधकार की कोई गुंजाइश न बचे। किंतु एक दुर्भाग्य की बात यह है कि आज के सामाजिक परिदृश्य में बहुत सी बुराइयां अंधकार का ही प्रतिबिंब बनकर व्याप्त हैं। हाल ही की एक हृदयविदारक घटना का जिक्र करना चाहूंगा, अभी कुछ दिन पूर्व ही बीएचयू परिसर में आईआईटी की एक छात्रा के कपड़े उतरवा कर उसका अश्लील वीडियो बनाया गया। यह कोई एक घटना नहीं है बल्कि ऐसी न जाने कितनी घटनाएं हमारे समाज एवं देश में प्रतिदिन घटित होती रहती हैं। ये सभी घटनाएं भी एक ऐसे अंधकार का ही प्रतीक हैं जो समाज एवं व्यक्ति की मानसिकता में अपनी जड़ें मजबूत कर चुका है। पुन: यह कहना चाहूंगा कि अंधकार का एक कदम भी केवल उसी स्थिति में एवं उसी शर्त पर आगे बढ़ता है जबकि प्रकाश एक कदम पीछे हट जाता है। जहां एक ओर भाईदूज का त्योहार बहन एवं बेटियों की सुरक्षा का प्रतीक बनकर आता है एवं हमेशा यह संदेश देकर जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति की यह जिम्मेदारी है कि वह समाज एवं राष्ट्र के माहौल को बहन एवं बेटियों के लिए सुरक्षित एवं सुखद बनाने का संकल्प ले, वहीं दूसरी ओर उन्ही बहन बेटियों के साथ अश्लील हरकतों एवं अत्याचारों को अंजाम देकर त्योहारों की पवित्रता को कलंकित किया जाता है। जाहिर सी बात है कि सतर्कता, सजगता एवं निष्क्रियता के प्रकाश के अभाव में ही इन अपराधों का अंधकार अस्तित्व में आ रहा है। एक अन्य उदाहरण जो विचार करने योग्य है, वो यह है कि शिक्षा, सतर्कता एवं अज्ञान के अंधेरे में आज साइबर अपराध बड़ी तेजी से फ्ल फूल रहे हैं। आए

दिन अनगिनत लोग इनका शिकार हो जाते हैं। सदियों की गुलामी के अंधेरे में रहने के बाद 15 अगस्त 1947 को हमने आजादी का उजाला देखा था किंतु 76 वर्षों के उपरांत भी स्थिति यह है की अंधकार तरह–तरह की कुप्रथाओं, अव्यवस्थाओं एवं अपराधों के रूप में हमारे देश एवं समाज में व्याप्त है। यह नितांत दुर्भाग्यपूर्ण एवं कष्टप्रद बात है कि एक तरफदेश मे महिलाओं के सशक्तीकरण हेतु ष्मिशन शक्तिष् जैसे अभियान चलाए जा रहे हैं वहीं दूसरी ओर महिलाओं के साथ अत्याचार एवं जघन्य अपराध थमने का नाम नहीं ले रहे हैं। हमें यह भलीभांति समझ लेना चाहिए कि प्रकाश का होना तभी सार्थक है जब अंधकार का कोई अवशेष तक शेष न बचे। निस्संदेह दीपावली का त्यौहार एक वर्ष के अंतराल पर हमेशा आता रहेगा किंतु केवल घर की छत एवं चौखट पर चंद दीप प्रज्वलित कर देने से ही इस पावन पर्व का उद्देश्य सिद्ध होने वाला नहीं है।

व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र प्रत्येक स्तर पर व्याप्त अंधकारों को पूर्णतया समाप्त करने के लिए एक ऐसी मुहिम छेड़नी होगी जोकि छोटे से लेकर बड़े स्तर तक मजबूती के साथ सक्रिय हो। प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के द्वारा अपने उद्बोधन के दौरान कहा गया है कि बहन एवं बेटियों की सुरक्षा से छेड़छाड़ करने वालों का हश्र रावण एवं कंस जैसा होगा। निस्संदेह समाज एवं राष्ट्र के प्रति उनका समर्पण अद्वितीय है किंतु यह भी ध्यान रखने योग्य है कि केवल शीर्ष पर विद्यमान व्यक्ति की प्रतिबद्धता एवं संकल्प मात्र से ही उद्देश्यों की पूर्ति संभव नहीं है। समाज एवं राष्ट्र में सुधार तभी आ सकता है एवं अपराधों का समूल नाश तभी संभव है जबकि ऊपर से नीचे तक प्रत्येक स्तर पर इसी तरह का समर्पण एवं साहसपूर्ण संकल्प विद्यमान हो। हम सभी को दीपावली के पावन पर्व पर यह शपथ लेनी चाहिए कि हम मिट्टी का दिया जलाने के साथ ही एक दिया अपने मन में इस शपथ के रूप में प्रज्वलित करेंगे कि हम सब देश से सभी तरह के अपराधों का समूल नाश करके, व्यक्ति से राष्ट्र तक प्रत्येक को अंधकारमुक्त करने का पूर्ण प्रयास करेंगे। ऐसा तभी संभव है जब हम किसी विशेष दिन एवं तिथि को ही नहीं अपितु प्रत्येक दिन को दीपावली की तरह मनाते हुए एक तीव्र अंधकारनाशक लौ को जलाने का प्रयत्न करें।

प्रेम का दिया, समर्पित तेल, विनम्रता की बाती

पूजा गुप्ता
मिर्जापुर उ.प्र.

एक जलता हुआ दीपक अंधेरे को दूर करके आसपास के वातावरण को रौशनी देता रहता है। वहीं इस दियें की जलती हुई लौ उसकी बाती और तेल का अपना एक महत्व भी है। दीपावली का जब त्यौहार आता है तो बड़ी धूमधाम से इसें मनाया जाता है, पर उससे जुड़ी एक सच्चाई भी है, जिसे समझना बहुत जरूरी है। जलता हुआ दीपक समाज में रहने वाले लोगों की मानवता का प्रतीक होता है। हम मानव जीवन को इनके गुणों से तुलना करके इसकी गहराई को समझ सकते हैं।

कच्ची मिट्टी का दिया: माधुर्य और कोमलता का प्रतीक होता है। मिट्टी के दीपक को जब एक कुम्हार चाक पर रखकर एक सुंदर आकार देता है तो वह अपने मन से कई आकृतियां बना देता है, कभी गहरा, कभी चौड़ा, गोल इस प्रकार के वह मनचाहे रूप दियें को दे देता है और इस प्रकार एक सुंदर दिया बन जाता है जो मिट्टी के माधुर्य और कोमलता का प्रतीक होता है। दिया का कार्य प्रकाश फैलाना होता है। वह अपने अंदर तेल और बाती को स्थिरता प्रदान करता है। दीपक ताप सहते हुए तेल में डूबी हुई बाती की पीड़ा अपने अंदर सहन करता है और इस तरह वह दिया कठिन परिस्थितियों में भी मजबूत बना रहता है। इसी प्रकार हर मनुष्य को होना चाहिए कठिन परिस्थितियों में आसानी से आगे बढ़कर सफ्लता प्राप्त कर सकता है।

बाती: त्याग और बलिदान का प्रतीक है। एक बाती मनुष्य के जीवन में जुड़ कर एक नई प्रेरणा देती है। यह खुद जलकर दूसरों के जीवन में उजाला कर देती है। इसका आवरण एक सफेद रूई होता है जब यह बाती जलती है तो एकदम काली हो जाती है, यह एक दीपक के अंदर पड़े हुए तेल में खुद को समर्पित करके सहनशक्ति भरकर अंत में बिखर जाती है, पर लोगों को यह प्रेरणा देकर जाती है कि सब दूसरों का जीवन रौशन करे, भले ही अपने अपने सुखों का त्याग करना पड़ जाए, लेकिन दृढ़ता पूर्वक खुद को तैयार करना जरूरी है तभी आप खुद को तपाकर एक खरा सोना बनेंगे जीवन में संयमित होना एक बाती सिखा जाती है।

तेल: प्रेम और विनम्र रहना एक दीपक का तेल सिखाता है। जब दीपक एक तेल से भरा होता है तभी दीपक का सही महत्व होता है तेल विनम्रता का प्रतीक होता है। जहां तक दीपक के अंदर तेल भरा होता है उसके अंदर पड़ी रुई की बाती के अंदर इस में समाई हुई होती है। वह अपने अस्तित्व को भले ही गवा देती है, लेकिन प्रकाश फैला कर उस तेल की सार्थकता को साबित कर जाती है। इसी प्रकार मनुष्य को विनम्र होकर एक दूसरे से मित्रता का व्यवहार रखना चाहिए और एक दूसरे से जुड़े रहना चाहिए। अपने अस्तित्व को गवां कर अंधकार रूपी बुराई को दूर करना चाहिए। यह तेल का गुण होता है वो जिस पात्र में रहता है उसमें पूरी तरह समाहित हो कर तारतम्य स्थापित कर लेता है। मनुष्य को इससे प्रेरणा लेकर खुद को उस वातावरण में डालने का प्रयास करना चाहिए।

दिया की ज्योति: दीया की ज्योति अंदरूनी जीत की खुशी का कारक है। यह लोगों में प्रेरणा देती है की सदा जलते रहो, अंधकार दूर करते रहो और जितना ऊंचा आप उठ सकते हैं, उतनी ऊँची सफ्लता आपको प्राप्त होगी। दिये की यह लौं जलते हुए, फैले हुए अंधकार को दूर करके दूसरों को यह प्रेरणा देता देती है कि कठिन परिस्थितियों में डट कर सामना करो किसी भी मुसीबत का और अपनी ज्वलनशीलता से वह यह प्रेरणा देती है, कि रात कितनी भी काली क्यों ना हो, एक दिन एक नया सबेंरा आता है। दियें की ज्योति की तरह मनुष्य को ऊंचा उठते रहना चाहिए। अपने ज्ञान का प्रकाश सभी जगह फैलाना चाहिए अज्ञानता को दूर करके। सबके साथ मिलकर सहयोग के भावना से सारे जगत में आलोक फैलाएं यही सिखाती है यह लौं।

चलो दीप जलाएं

डा. कनक रानी
पूर्व प्राचार्य

दीप्यते दीपयति वा स्वं परं च जो स्वयं प्रकाशित हो और दूसरों को प्रकाशित करे, उसे दीप कहते हैं। दीपावली दीपों की श्रंखला का पर्व है। जब प्रखर सूर्य और चन्द्र रात्रि के अंधकार को नष्ट करने में विफ्ल होते हैं तब नन्हा सा दीपक इस कार्य को सफ्ल बनाने हेतु स्वयं को समर्पित करता है। दीप पंक्ति तो सम्पूर्ण परिसर को आलोकित करती है। भारतीय संस्कृति में सूर्य, अग्नि और उसके अंशस्वरूप दीपक के सन्दर्भ में उत्कृष्ट भावों को दृष्टिगत किया गया। गोधूलि काल में दीप मनोहारी दृश्य की सृष्टि करता हुआ मन में अद्भुत शांति और आशा का संचार करता है।

सांस्कृतिक परम्परा में दीपक की विशेष संस्थिति है। अंधकार में सजग प्रहरी है दीप जो अन्तर्मन में व्याप्त भेदभाव, वैमनस्य, द्वेष, नैराश्य के अंधकार को दूर करने हेतु प्रेरित करता है। प्रकाश का जनक, ज्ञान का प्रतीक, वातावरण का शोधक, पथ का प्रदर्शक दीपक अपने कर्तव्य से देदीप्यमान रहता है। दीप है तो उजाला भी अवश्य है। वैदिक संदेश है कि हम अंधकार से प्रकाश की ओर चलें– तमसो मा ज्योतिर्गमय। अंतस के अज्ञान को दूर कर नवीन ऊर्जा का संचार करने का यह पर्व है। यह जीवन को ज्योतिर्मय करने का संदेश देता है। दीपक की ज्योति सदैव ऊपर की ओर बढ़ती है, मानवीय वृत्तियां भी उर्ध्वगामी हों। वैदिक संदेश है–**उद्यानम् ते पुरूष नावयानम्।**

अर्थात् उत्थान के लिए प्रयत्नषील रहो और पतन से सावधान। महात्मा बुद्ध संदेश देते हैं कि ‘अप्प दीपो भव’। अपने दीपक स्वयं बनो और अन्त:ज्योति से जीवन को अर्थवान बनाओ। दीप कल्याणेच्छु बनकर सबका मार्गदर्शन करता है–**शुभम् करोति कल्याणम् आरोग्यम् धनसंपदा। शत्रुबुद्धि विनाशाय दीपकाय नमोऽस्तु ते।।**

पर्यावरण की दृष्टि से भी इसका महत्त्व है। शुत्र घृत अथवा सरसों के तेल से प्रज्वलित दीपक परिवेश को हानिकारक तत्वों से मुक्त कर, वातावरण को प्रदूषण मुक्त कर सात्विकता व शुद्धता का विस्तार करता है तथा स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से अनुकूलता लाता है। संस्कृत साहित्य में तो दीपक शब्द वैशिष्ट्य व वैविध्य को प्रकाषित करता है– **प्रदोषे दीपक: चंद्र: प्रभाते दीपको रवि:। त्रैलोक्ये दीपक: धर्म: सुपुत्रो कुलदीपक:।।**

अर्थात् रात्रि में चंद्रमा दीपक है, प्रभात काल में सूर्य दीपक है, तीनों लोकों में धर्म दीपक है, और सुपुत्र कुलदीपक है। हिंदी के साहित्यकार गोपालदास नीरज धरा के अंधेरे को दूर करने के लिए आह्वान करते हुए दिखाई देते हैं–जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना, अंधेरा धरा पर कहीं रह ना जाए। महादेवी वर्मा भी अपने मन के दीपक को प्रखर कर रही हैं– **आस की तुम आड़ लेकर दीप मेरे, जल अकंपित।**

दीप अपना अस्तित्व सार्थक करता है। किसी वस्तु के संज्ञान के लिए दीपक सहायक बनता है। प्रज्ज्वलित दीपक मन में आशा का संचार करता है। दीप सकारात्मक ऊर्जा की अनुभूति कराता है। यह अंधकार को दूर करने में सर्वात्मना डटे रहने, लक्ष्य पर अडिग रहने का संदेश देता है।

वस्तुत: दीप प्रज्ज्वलन का आध्यात्मिक पहलू भी है। यह भौतिक शरीर दीपक है जो स्नेह (तेल) से प्रज्वलित होता है जब स्नेह परस्पर वितरित होता है तो जीवन सार्थकता की दिशा में प्रवृत्त होता है। संवेदना, सौमनस्य, सहानुभूति से मानवता आशान्वित होती है। स्वयं के लि, ही नहीं परार्थ भी नैराश्य दूर करने का ध्येय हो।

युवा पीढ़ी से अपेक्षा की जाती है कि सर्वजनहिताय मनोविकारों को ध्वस्त कर एकता की दिशा में बढ़ा जाए। प्रकाश की श्रंखला व्यर्थ न जाए और अंधकार पर प्रकाश की विजय–पताका फहराये। इस ज्योति पर्व पर दुर्गुणों को परास्त कर अपनत्व विस्तारित हो। संवेदना और सद्भाव को मुखरित कर दीन हीन जनों के सहायतार्थ दीप–श्रंखला प्रज्वलित हो। सौहार्द से मानवता के संरक्षित और आच्छादित हो। प्रबल अपेक्षा तो यह है कि घोर निराशाओं के मध्य भी आशा के दीप जलाए जाएं। यही दीपोत्सव की सार्थकता है। चलो, सनातन संस्कृति से हस्तांतरित ज्ञानदीप के प्रज्वलन की परंपरा को आगे बढ़ाएं।

हम आप और रसोई

मोहनथाल

ऐसा व्यंजन जिसके बारे में कहा जाता है कि यह भगवान कृष्ण को बहुत पसंद था। दिवाली पर बाजार से मिलावट वाली मिठाई लाने की जगह घर पर बनाइये और सबको खिलाइए। थोड़े सी चीजें जो आसानी से घर पर उपलब्ध होती हैं उनसे ही बड़ी आसानी से बन जाती है। फ्रिज में रख कर दो हफ्तों तक आराम से खा सकते हैं।

Happy Diwali Special रेसिपी

पारुल जैन
मस्कत, ओमान

विधि

बाजार में 2 क्वालिटी का बेसन उपलब्ध है. एक बारीक दानेदार और दूसरा गाढ़े रूप में। मोहन थाल बनाने के लिए मोटे दानों वाला बेसन अच्छा रहता हैं। बेसन को प्याले में छान लीजिये। इसमें 2 छोटी चम्मच घी डालकर अच्छी तरह मिला लीजिए। मिश्रण में दूध डालकर आटा गूथ लीजिए। आटे को ढककर 2 मिनिट के लिये रख दीजिये।

अब इसमें चीनी और उतना ही पानी मिलाकर चाशनी बना लें। मिठाई को सजाने के लिए कुछ बादाम और पिस्ते अलग रख दीजिये। अब इस चाशनी में सारे ड्राईफ्रूट्स और मेवा डाल दीजिए। अब एक बड़ा पैन लें और उसमें थोड़ा सा तेल गर्म करें. आटा उठाइये और इसे तेल में भून लीजिये। जैसे ही आपको तेल से आने वाली खुशबू आने लगे तो इसमें मावा डाल दीजिए और मिश्रण को अच्छे से चला लीजिए। अब बेसन और मावा का रंग भूरा होने पर मिश्रण में चाशनी डालें। इसे 6-7 मिनट तक पकाएं। एक प्लेट लें, उसे अच्छी तरह चिकना कर लें और मिश्रण को उस पर समान रूप से फैला दें। इसे कटे हुए बादाम और पिस्ते से सजाएं. (यह मिश्रण 3-4 घंटे में जम जायेगा) मिठाई को अपनी इच्छानुसार छोटे छोटे टुकड़ों में काट लीजिये। मोहन थाल खाने और परोसने के लिए तैयार है।

नोट-

'बेसन मोटा लीजिएगा तो ज्यादा अच्छी बनेगी
'चीनी कम या ज्यादा कर सकते हैं
'मेवे अपनी पसंद से डालिये

सामग्री........

बेसन - 100 ग्राम (1 छोटी कटोरी)
घी - 100 ग्राम. (1 छोटी कटोरी)
दूध - 2 टेबल स्पून
चीनी - 100 ग्राम. (1 छोटी कटोरी)
मावा - 100 ग्राम. (1 छोटी कटोरी)
काजू - 10 (छोटे टुकड़ों में काट लीजिये)
बादाम - 10 (बारीक कटे हुए)
पिस्ते - 15 (बारीक कटे हुए)
छोटी इलायची - 5-6 (छीलकर पीस लीजिये)

DUKE
the essence of great fashion
मेंस एण्ड वूमेन रेडीमेड गारमेन्ट्स का अत्याधुनिक स्टोर
टी-शर्ट, जींस, लोअर, शर्ट, पैंट आदि उपलब्ध
प्रो. अनुपम वर्मा
मो. 9839656814
विशेष: विंटर बियर पर वाई वन गेट वन फ्री
शॉप नं0-18, आश्रम बाजार, बरेली मोड़ शाहजहाँपुर

खन्ना ब्रदर्स एण्ड सन्स
उच्च क्वालिटी की साड़ी, लहंगा सूट, कुर्ता पैजामा, शूटिंग शर्टिंग गर्म सूट लेंट, बैडशीट, कंबल, कम्फर्टल आदि उचित दामों पर उपलब्ध
प्रो. शिव किशोर खन्ना
राज खन्ना
मो. 7705009275
शॉप नं0-11/12, आश्रम बाजार, बरेली मोड़ शाहजहाँपुर

इस बार की दीवाली

प्रिया देवांगन 'प्रियू'
गरियाबंद छत्तीसगढ़

नरेश कक्षा आठवीं का छात्र था। उसकी दो बहनें थीं- जयंती और नंदनी। वह सबसे छोटा था। माँ-बाप खेती-किसानी करते थे। अल्प वर्षा के कारण इस साल फसल अच्छी नहीं थी। वैसे भी घर की आर्थिक स्थिति पहले से खराब थी। जैसे भी हो, बस गुजर-बसर हो रहा था।

दीपावली का त्यौहार आया। दीपावली की पूरी तैयारी हो गयी थी। नरेश के बाबूजी रघु बच्चों के लिए नये कपड़े नहीं ले पाये थे। नरेश सबसे छोटा था। इसलिए सब के आँखों का तारा था। इस बात का नरेश घर में पूरा - पूरा फायदा उठाता था। दीपावली की तैयारी में ही बहुत से पैसे खर्च हो चुके थे। नये कपड़े के लिए सोचना पड़ रहा था। रघु और उसकी पत्नी गीता मन ही मन सोच रहे थे कि थोड़ा सा घर में धान रखा हैय मंडी ले जाते हैं, वो बिक जाये तो बच्चों के लिये कपड़े भी आ जायेंगे। रघु मंडी की तरफ गया और नरेश खेलने के लिए अपने दोस्त विनय के घर चला गया। विनय ने नरेश को अपना नया कपड़ा, फुलझड़ी, और बहुत सारे पटाखे दिखाते हुए पूछा -'तुमने कौन - कौन से पटाखे खरीदे हैं ? नरेश , चलो न तुम्हारे घर, मुझे तुम्हारे भी नये कपड़े और पटाखे देखने है।' नरेश झट से बोला 'आज शाम को मेरे बाबू जी नये कपड़े और पटाखे लायेंगे फिर तुम्हें दिखाऊँगा।' विनय बोला 'ठीक है भाई, इस बार दोनों साथ में मिलकर दीपावली मनायेंगे।'

नरेश को पता था कि घर की हालत अच्छी नहीं है। फिर भी रघु के पास गया और बोला- 'बाबू, मुझे नये कपड़े चाहिये, विनय के पापा उसके लिए कपड़े और पटाखे भी ले आये हैं।' रघु नरेश की तरफ टुकुर-टुकुर देखने लगा। उसकी बहनें भी देखने लगीं, क्योंकि नरेश अलबेला भी था। वह मुँह बनाते हुए कह रहा था। जयंती और नंदनी दोनों बहनें घर की हालत समझती थीं। नंदनी को दीपावली के पहले ही खेल प्रतियोगिता में दो हजार रुपये मिले थे। नंदनी अपनी कॉपी में यह सोचकर दबा कर रखी थी कि दीपावली में नये कपड़े खरीदने के काम आएँगे। आज जब कॉपी ढूँढने लगी, तो वह कॉपी ही नहीं मिल रही थी। वह थोड़ी परेशान हो गयी थी। नरेश पूरे गाँव में घूम-घूम कर खेलता था। खेलते-खेलते अचानक देखा कि एक बुढ़िया बाजार में दीये बेचते-बेचते बेहोश हो गयी। नरेश, विनय और कुछ साथी उस बुढ़िया के पास गये और आवाज लगाई 'दाई, ओ दाई। फिर विनय ने बुढ़िया के मुँह पर पानी छिड़का। तब जाकर उसका होश आया। बच्चे खुश हो गये। नरेश दूसरों की मदद के लिए हमेशा आगे आ जाता था। सभी बच्चे बोले कि अब दाई को होश आ गया। चलो घर तरफ चलते हैं। नरेश कुछ समय चुप रहा, फिर बोला- 'तुम लोग जाओ, मैं आता हूँ।'

विनय बोला- 'क्यों...अब क्या हुआ ?' नरेश ने कहा मुझे उस दाई की मदद करनी है। चलो हम सब बैठकर दीये बेचते हैं।' सभी दोस्त हँसने लगे। उसकी खिल्ली उड़ाने लगे- 'अरे नरेश, तू पागल हो गया है क्या ऐसे बाजार में बैठ कर हम दीये बेचेंगे। ना बाबा ना। मेरे घर वाले मुझे देखेंगे तो मेरा धनिया बो देंगे। मैं जा रहा हूँ।' कहते हुए विनय वहाँ से चला गया। नरेश

बुढ़िया के पास बैठ गया, और उसकी मदद करने लगा। सारे दीये बहुत ही जल्दी बिक गये। नरेश जा ही रहा था कि बूढ़िया ने नरेश का हाथ पकड़ा। बोली- 'बेटा अपनी मेहनत की कमाई ले जा।' नरेश 'नहीं.....नहीं....माँ जी। मैं नहीं ले जा सकता।'

बुढ़िया बोली 'घर में सिर्फमैं बस रहती हूँ। मुझे इतने पैसे की जरूरत नहीं है बेटा। दीपावली का त्यौहार है। अपनी डोकरी दाई का ही आशीर्वाद समझ कर ले लो।' नरेश के मन में लड्डू फूटा। फिर उसे पाँच सौ रुपये मिल गये। नरेश फूला नहीं समा रहा था। नरेश और रघु दोनों एक साथ ही घर पहुँचे। दोनों के चेहरे में अनोखी मुस्कान थी। नरेश की माँ पूछ बैठी कि क्या बात है भाई, बाप-बेटे के चेहरे में इतनी खुशी है। बाजार में खजाना मिल गया क्या ..?' नरेश ने सभी को आपबीती सुनाई। रघु ने भी धान की बिक्री वाली बात बताई। सब बड़े खुश हुए, लेकिन नंदनी अभी भी परेशान थी। नरेश ने पूछा 'क्या हुआ दीदी, क्यों परेशान हो ?' नंदनी बोली 'मेरी नीले रंग की कॉपी नहीं मिल रही है।' नरेश बोला 'ओ ....! इतनी सी बात में परेशान हो रही हो। वो तो आलमारी में है।' नंदनी झट से बोली- दिखा, दिखा कहाँ है?' नरेश बोला- 'इतना क्यों कूद रहे हो? मैं देख रहा हूँ, इसमें क्या है ?' फिर बोला 'दीदी, ये कॉपी में तो कुछ नहीं है। बिल्कुल खाली है।' नरेश की बातें सुनकर नंदनी के पैरों तले जमीन खिसक गयी। लेकिन नरेश मुँड़ी गड़िया कर दाँत दिखा रहा था, तो सब समझ गए कि नरेश मजाक कर रहा है। रघु ,नरेश और नंदनी तीनों ने अपने-अपने पैसे इकट्ठे किये। रघु के घर बूँद-बूँद में घड़ा भर ही गया। नए कपड़े, पटाखे, मिठाई व अन्य जरूरत के सामान खरीदे गये। खुशी-खुशी दीपावली मनाई गयी।

गजल

उनसे बिछड़े तो जाना है।
मुश्किल अपना जी पाना है।

इतना कहकर छोड़ा उसने,
ये आशिक तो दीवाना है।

क्या कहना उनकी आंखों का,
चलता फिरता मयखाना है।

सुख दु:ख इस जीवन का हिस्सा,
इक जाना है इक आना है।

शम्मा बस होती है रौशन,
जलता लेकिन परवाना है।

मेरे गम की चर्चा सबमें,
एक वही बस अंजाना है।

सच पूछो तो दिल का कमरा,
'पारस' तुम बिन वीराना है।

विकास शर्मा 'पारस'
शाहजहांपुर

अब पौधों से मिलेगी वायु प्रदूषण की जानकारी

■ डा. आदर्श पांडे के पौधा-आधारित संवेदन यंत्र का पेटेंट अनुदत्त

लोक पहल

शाहजहांपुर। पेटेंट कार्यालय, भारत सरकार की ओर से स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ आदर्श पाण्डेय को पेटेंट अधिनियम के तहत पेटेंट 'ए प्लांट बेस्ड सेन्सिंग डिवाइस फॉर डिटेक्टिंग एयर पॉलूटेंट्स' नामक आविष्कार के लिए पेटेंट अनुदत्त कर प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

डॉ पाण्डेय ने बताया कि नवीनतम प्रौद्योगिकी विकास में, वायु प्रदूषण को पहचानने वाले पौधा–आधारित संवेदन यंत्र को पेटेंट के रूप में मान्यता प्राप्त हुई है। इस अद्वितीय यंत्र का मुख्य उद्देश्य वायु में मौजूद हानिकारक प्रदूषकों को पहचानना है।

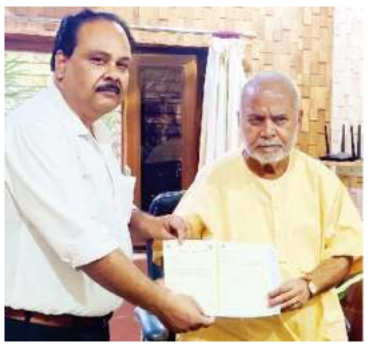

इस पौधा–आधारित संवेदन यंत्र के बनने से लोगों को उनके चारों ओर हो रहे वायु प्रदूषण के स्तर का पता चलेगा, जिससे वे स्वास्थ्य संबंधित जोखिमों से बच सकते हैं। इस पौधा–आधारित उपकरण की सहायता से नगर निगम और पारिस्थितिकी विभाग भी वायु प्रदूषण के क्षेत्रों को निर्धारित कर सकेंगे।

डॉ पाण्डेय ने बताया कि इस पेटेंट मे देश भर के 13 अन्य वैज्ञानिकों का सहयोग रहा। जिसमे महाराष्ट्र से प्रिया दिलीप लोकरे, प्रोफेसर (डॉ) बी के सरकार, अशोक पंजजी साल्वे, बापू काम्बले, संदीप रामराव निकम एवं स्नेह अग्रवाल, हरियाणा से अंशुल सिंह, उत्तर प्रदेश से कुल भास्कर, डॉ अशोक कुमार, प्रो. सुष्मिता श्रीवास्तव, झारखंड से कमलकांत पात्रा, मेघालय से डॉ अनुपमा मिश्रा व उत्तराखंड से उपेंद्र मोहन भट्ट शामिल रहे।

राजमाता भारत गौरव अवार्ड से सम्मानित किये गए डॉ.पुनीत मनीषी

लोक पहल

शाहजहाँपुर। एच.आर.एस. श्रीमंत राजमाता विजयाराजे सिंधिया फाउंडेशन, की ओर से वाई.डब्लू.सी.ए. कांस्टेंट हाल, नई दिल्ली में 'राजमाता भारत गौरव अवॉर्ड 223' पुरुस्कार से डॉ. पुनीत मनीषी को राज्यसभा सदस्य नरसिम्हा राव अर्जुन अवार्ड अशोक ध्यानचंद महामंडलेश्वर योगी हितेश्वरनाथ, पदम जितेंद्र सिंह राठी ने सम्मानित किया। डॉ. पुनीत मनीषी ने कहा कि माता–पिता व गुरुजनों के मार्गदर्शन व आशीर्वाद का प्रतिफल है कि यह पुरस्कार उनको प्राप्त

हुआ।उन्होंने कहा कि राजमाता भारत गौरव अवॉर्ड खेल ,कला, साहित्य, समाजसेवी, दिव्यांगजन, शासकीय सेवा से जुड़ी करीब करीब 5 विभूतियो को उनके द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यो के लिए प्रदान किया जाता है। डॉ. पुनीत मनीषी की इस उपलब्धि पर क्षेत्राधिकार यातायात जगदीश लाल टम्टा, चंद किरण यादव, सत्येंद्र दीक्षित, डॉ.गौरव कौशल, हरगोविंद मोदी, ओंकार मनीषी, नेहा मनीषी, उर्वशी श्रीवास्तव, ऐशान्या मनीषी,डॉ. स्वप्निल यादव, अजय पाल, फुटबॉल कोच पंकज सक्सेना, नरेंद्र त्यागी, विनय गुप्ता, डॉ.अनुराग अग्रवाल, ने हर्ष व्यक्त किया है।

एसएस कालेज की निहारिका को मिलेगा गोल्ड मेडल
10 नवंबर राज्यपाल करेगीं सम्मानित

शाहजहाँपुर। एस.एस. कॉलेज की बी.कॉम फाइनेंस की छात्रा निहारिका सिंह ने विश्वविद्यालय टॉप किया है। शहर के मोहल्ला चौक निवासी मधुकर श्याम वर्मा व साधना वर्मा की पुत्री निहारिका सिंह को बी.कॉम फाइनेंस में 8 प्रतिशत अंक के साथ विश्विद्यालय टॉपर घोषित किया गया है। निहारिका सिंह को 10 नवंबर को विश्वविद्यालय में अयोजित होने वाले दीक्षांत समारोह में राज्यपाल आनंदी बेन पटेल द्वारा स्वर्ण पदक एवं टॉपर प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया जाएगा। निहारिका ने अपनी सफलता का श्रेय विशेष रूप से अपने माता पिता, वाणिज्य विभागाध्यक्ष प्रो.अनुराग अग्रवाल, डा. के.के वर्मा तथा विभाग के समस्त गुरुजनों को दिया है। निहारिका की सफलता पर विद्यालय के सचिव डा. ए.के मिश्रा, प्राचार्य प्रो.आर के आजाद तथा कामर्स विभाग के सभी शिक्षकों ने निहारिका की सफलता पर हर्ष व्यक्त किया।

दीपावली मनी

दीपक और हवा से
कर बारूदी तनातनी।
दीपावली मनी।

सुतली बम,चर्खी,अनार
महतावों के भंडार।
धुंआ उगलते चले
गगन में रॉकेट बारम्बार।

शोर, पटाखे चले सांस
की सांसत हुई घनी।

दूर पखेरू उड़े शहर
के उत्सव से अंजान।
टकराए कुछ गिरे भूमि पर
होकर के निष्प्राण।

वानर दल की हुई तबीयत
शोलों से अनकनी।

यह प्रकाश का पर्व तमस
अंतर की दूर हुई क्या।
जो अभाव से त्रस्त गरीबी
चकनाचूर हुई क्या।

बेकारी से त्रस्त भूख की
कहाँ रसोई बनी।

दीपावली स्वच्छता, शुचिता
का सुखप्रद त्योहार।
स्वास्थ्य, समृद्धि, प्रकाश, प्रेम
गोवर्धन सा विस्तार।

स्वप्न नहीं श्रम ही करता है
हर निर्धन को धनी।

कमल 'मानव
शाहजहांपुर

दीपावली का इतिहास और जुड़ी मान्यताएं

डा. विकास खुराना
इतिहासकार

भारत के अनुपम त्यौहारों में एक है प्रकाश पर्व, सदियों से ही भारत भूमि प्रकाश की आकांक्षी है।वेद कहता है तमसो मा ज्योतिर्गमय,हमे अंधकारण प्रकाश की ओर ले चलो।विश्वविख्यात संत जग्गी वासुदेव इसे अन्य अर्थों में बताते है जब वे यह कहते है कि भारतीय संस्कृति में एक दौर ऐसा भी था, जब साल के हर दिन कोई न कोई त्योहार मनाया जाता था। कहने का तात्पर्य तीन सौ पैंसठ दिन और तीन सौ पैंसठ त्योहार। इसके पीछे सबसे बड़ी वजह यह थी कि हम चाहते थे कि हमारा पूरा जीवन एक उत्सव बन जाए। दुर्भाग्य से आप सड़क चलते, दफ्तर में या काम के दौरान यूं ही उत्सव नहीं मनाते, इसलिए ये त्योहार उत्सव मनाने का एक बहाना भर थे। दिवाली मनाने के पीछे भी विचार यही था कि आपकी जिंदगी में उत्सव मनाने का विचार लाया जा सके, इसीलिए इस दिन पटाखे जलाए जाते हैं, ताकि थोड़ी सी चिंगारी व उत्साह का संचार आपके भीतर भी हो सके।दीपावली के त्योहार का मकसद यह नहीं है कि बस एक दिन मौज मस्ती की और उसके बाद फिर वैसे ही सुस्त पड़ गए। नहीं, इसका असली मकसद है कि साल के हर दिन हमारे अंदर वही उमंग और उत्साह रहे। अगर हम यूं सहज बैठें तो हमारी जीवन ऊर्जा, दिल, दिमाग, शरीर एक पटाखे की तरह उमंग से भरा रहे। लेकिन अगर आप भीगी हुई फुलझड़ी हैं, तो आपको रोजाना किसी बाहरी पटाखे की जरूरत होगी।दिवाली रोशनी का त्योहार है। इस दिन आपको हर शहर, कस्बा और गांव हजारों दीयों से जगमगाता मिलेगा, लेकिन असली चीज बाहर दीये जलाना नहीं है, बल्कि भीतर का दीया जलाना है, आपके भीतर रोशनी होनी चाहिए। रोशनी का मतलब है स्पष्टता। आपमें चाहे कोई भी गुण हो, स्पष्टता के बिना वह आपका कोई भला नहीं करेगा, बल्कि आपका अहित ही करेगा क्योंकि स्पष्टता के अभाव में आत्मविश्वास भी खतरनाक होता है। यह विडंबना ही है कि आजकल दुनिया में बहुत सारे काम बिना स्पष्टता के ही किए जा रहे हैं।माना जाता है कि दीपावली के दिन अयोध्या के राजा राम अपने चौदह वर्ष के वनवास के पश्चात लौटे थे। अयोध्यावासियों का ह्रदय अपने परम

प्रिय राजा के आगमन से प्रफुल्लित हो उठा था। श्री राम के स्वागत में अयोध्यावासियों ने घी के दीपक जलाए। कार्तिक मास की सघन काली अमावस्या की वह रात्रि दीयों की रोशनी से जगमगा उठी। तब से आज तक भारतीय प्रति वर्ष यह प्रकाश–पर्व हर्ष व उल्लास से मनाते हैं। भारतीयों का विश्वास है कि सत्य की सदा जीत होती है और असत्य का नाश होता है। देश में पूर्व से लेकर पश्चिम तक और उत्तर से लेकर दक्षिण तक इस पर्व को लेकर अनेक मान्यताएं जुड़ी हैं।

हिंदू धर्म से जुड़े लोगों के लिए दिवाली का पर्व बहुत ज्यादा मायने रखता है क्योंकि इस दिन शुभ एवं लाभ के देवता भगवान श्री गणेश के साथ धन की देवी मां लक्ष्मी की विधि–विधाने से पूजा की जाती है ताकि पूरे साल उनके घर में सुख–सौभाग्य बना रहे।दिवाली के दिन जमीन पर उतर आते हैं देवता भारत के पूर्व में वाराणसी की दिवाली काफी प्रसिद्ध है। यहां पर दिवाली से ज्यादा रौनक देव दिवाली के दिन देखने को मिलती और इस दिन घाटों को कई हजार दीये से सजाया जाता है. हिंदू मान्यता के अनुसार इस दिन स्वर्गलोक से देवतागण पृथ्वी पर दिवाली मनाने के लिए आते हैं. देव दिवाली को देखने के लिए न सिर्फदेश बल्कि विदेशों से लोग पहुंचते हैं।

उत्तर भारत की तरह पंजाब में भी दिवाली की अलग रौनक देखने को मिलती है. पंजाब में सिखी परंपरा से जुड़े लोग इस पर्व को बंदी छोड़ दिवस के रूप में मनाते हैं. उनकी मान्यता है कि इसी दिन सिखों के छठवें गुरु हरगोविंद सिंह को जेल से रिहा किया गया था. इस दिन अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में रोशनी और आतिशबाजी देखने लायक होती है.गुजरात में कुछ ऐसे होती है दिवाली की रौनक गुजरात में दिवाली का पर्व बड़ी धूम–धाम से मनाया जाता है. गुजरात दिवाली के अगले दिन गुजराती लोगों का नया साल प्रारंभ होता है। मसलन नेपाल में दिवाली को स्वान्ति कहा जाता है। यहां पर भी यह पावन पर्व पांच दिनों तक मनाया जाता है. वहीं श्रीलंका में तमिल लोग इस पावन पर्व को विधि–विधाने से मनाते हैं. इसी प्रकार अमेरिका, लंदन, थाईलैंड, मलेशिया आदि में भी दिवाली के मौके पर खूब धूम रहती है. यहां पर रहने वाले दिवाली का पर्व पारंपरिक तरीके से पूजा–पाठ करके मनाते हैं।

अंधकार पर प्रकाश की और अज्ञान पर ज्ञान की विजय का प्रतीक दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ

मुमुक्षु शिक्षा संकुल अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती की प्रेरणा से जिले के बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से पाश्चात्य वैज्ञानिक, तकनीकि ज्ञान, साहित्य कला की शिक्षा प्रदान करने हेतु 25 फरवरी 1989 को कांचीकाम कोटी पीठ के जगतगुरू शंकराचार्य द्वारा मुमुक्षु आश्रम परिसर में श्री शंकर मुमुक्षु विद्यापीठ की आधारशिला रखी गई। वर्तमान में इस विद्यापीठ में 1500 से अधिक छात्र–छात्राएं अध्ययनरत है तथा 100 से अधिक शिक्षक–शिक्षिकाएं सेवाएं दे रहे है। विद्यापीठ अपने सुरम्य वातावरण तथा संरचनात्मक वैभव के लिए प्रसिद्ध है। यहां विज्ञान, कला, वाणिज्य विषयों सहित कम्प्युटर साइंस बायोटेक्नोलॉजी की शिक्षा भी प्रदान की जाती है। विद्यापीठ का आगामी लक्ष्य टोटल क्वालिटी मैनेजमेन्ट तथा आईएसओ 9001 की श्रेणी में स्कूल को मान्यता प्रदान कराना है। विद्यापीठ के पास दो विषाल प्रांगण है तथा व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक क्रीड़ा प्रतियोगिताओं तथा अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का निरनतर आयोजन यहां होता है। इसके वाषिक परीक्षा परिणाम सुधार मूल्यों, सद्व्यवहार, अनुशासन की विधा में वेग, स्पंदन, संगीत का सरस एवं शाश्वत संचार करते हैं। विद्यापीठ द्वारा राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त कान्वेन्ट स्कूलों के साथ एक्सचेंज प्रोग्राम शुरू किया जा रहा है।

अशोक अग्रवाल
सचिव

स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती
अध्यक्ष, प्रबंध समिति

डा. मेघना मेंहदीरत्ता
प्रधानाचार्य

एसएस कालेज में अर्थशास्त्र विभाग ने उपभोक्ता व्यवहार पर हासिल किया पेटेंट

लोक पहल

शाहजहांपुर। स्वामी शुकदेवानंद कॉलेज के अर्थशास्त्र विभागाध्यक्ष प्रो डा. मधुकर श्याम शुक्ला ने बताया कि प्राध्यापकों एवं शोध छात्रों के द्वारा एक पेटेंट उपभोक्ता व्यवहार पर सोशल मीडिया और डिजिटल अभियानों के वित्तीय प्रभाव का विश्लेषण करने की नीति को मिनिस्ट्री आफ कामर्स इनइंडस्ट्री गवर्नमेंट आफ इंडिया ने पब्लिश किया है। प्रोफेसर शुक्ला ने बताया कि इस पेटेंट में उनके अतिरिक्त अर्थशास्त्र विभाग के असिस्टेंट प्रो. डॉ राम शंकर पांडे, अर्चना पांडे, डॉ राम मनोहर लोहिया राजकीय महाविद्यालय आंवला के डॉ रघुवीर सिंह, ठाकुर रोशन सिंह राजकीय महाविद्यालय नबादा दरोबस्त, शाहजहांपुर के डॉ जसकरण, राजपाल, शोध छात्र (अर्थशास्त्र विभाग) शिवांगी शर्मा, शिवजीत मिश्रा, मोनू कुमार, तौसीफखान की प्रमुख भूमिका रही। डॉ शुक्ला ने बताया कि यह पेटेंट वर्तमान में उपभोक्ताओं के ऊपर सोशल मीडिया के माध्यम से पढ़ने वाले वित्तीय प्रभाव का अध्ययन पर है। परंपरागत व्यवसायो के लिए ऑनलाइन व्यापार चुनौती बनकर उभर रहा है इससे बाजार में वित्तीय उथल-पुथल हो रही है वर्तमान पेटेंट इसी स्टैटिसटिक्स को समझाते हुए परंपरागत व्यवस्थाओं को बचाने की दिशा में क्या कारगर उपाय हो सकते हैं इस बात की व्याख्या करता है। मुमुक्षु शिक्षा संकुल के मुख्य अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती, सचिव प्रो डॉ अवनीश कुमार मिश्रा, प्राचार्य प्रो डॉ राकेश कुमार आजाद, प्रो डॉ अनुराग अग्रवाल, डॉ आलोक मिश्रा, डॉ आदित्य कुमार सिंह, डॉ पूनम डॉ शालीन कुमार सिंह, डॉ विकास खुराना एवं अन्य सभी शिक्षकों ने सभी शोधकर्ताओं को बधाई दी।

शिक्षा, सुरक्षा व सुखद वातावरण ही मिशन शक्ति का उद्देश्य : प्रो. राकेश

एस एस कालेज में मिशन शक्ति अभियान में कार्यक्रमो का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। मिशन शक्ति अभियान के अंतर्गत स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय में महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान व स्वावलंबन के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यक्रमों शुभारंभ प्राचार्य प्रो. डा. राकेश कुमार आजाद ने मिशन शक्ति की रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर प्रो आजाद ने कहा कि मिशन शक्ति अभियान का उद्देश्य महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा, बालिका शिक्षा, महिलाओं को सुरक्षित एवं सुखद कार्य वातावरण प्रदान करना एवं महिलाओं को उनसे संबंधित योजनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करना है।महाविद्यालय के उपप्राचार्य डॉ.अनुराग अग्रवाल ने कहा कि छात्राएं आत्मनिर्भर बने और अपने आप को कभी भी कमजोर महसूस न करें।प्रो मीना शर्मा ने छात्राओं को साइबर क्राइम के बारे में जानकारी दी और सरकार द्वारा उनकी सुरक्षा के लिए 1090, 181, 112, 1076 आदि हेल्पलाइन नंबर के बारे में बताया। कार्यक्रम समन्वयक अर्चना गर्ग ने कहा कि मिशन शक्ति का उद्देश्य सरकार की कल्याण योजनाओं को जन-जन तक पहुंचना है। इस मौके परचित्रकला विभाग द्वारा 'बालिका शिक्षित होगी तो समाज और राष्ट्र सशक्त होगा' विषय पर स्लोगन लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।प्रतियोगिता में प्रथम स्थान राधा देवी, द्वितीय किंजल और तृतीय स्थान शाहनूर बानो ने प्राप्त किया। रचना शुक्ला के निर्देशन में ष्लैंगिक समानताष् विषय पर निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।प्रतियोगिता में प्रथम स्थान रंजीत सिंह ,द्वितीय निशा सिंह एवं तृतीय स्थान कमल वर्मा ने प्राप्त किया। डॉ पूजा बाजपेई के निर्देशन में एकता दौड़ का आयोजन किया जिसमें अखिलेश कुमार ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। द्वितीय स्थान पर अजय गुप्ता तथा तृतीय स्थान पर कमल वर्मा रहे। छात्राओं में भावना देवी एवं रितू वर्मा प्रथम स्थान पर, निशा गुप्ता द्वितीय स्थान पर तथा सीमा देवी तृतीय स्थान पर रहीं। निर्णायक मंडल की भूमिका डॉ आदित्य कुमार सिंह, डॉ शालीन कुमार सिंह, डॉ रमेश चंद्रा एवं डॉ प्रज्ज्वल पुंडीर ने निभाई। आयोजन में प्रीति, व्याख्या सक्सेना, सीतू शुक्ला, रश्मि राठौर आदि का सहयोग रहा।

लखनऊ में खूब चहके शाहजहांपुर के कब और बुलबुल

लोक पहल

शाहजहांपुर। रीजनल लेवल कब बुलबुल उत्सव में शाहजहांपुर की टीम ने शानदार प्रदर्शन किया। शाहजहांपुर मंडल बरेली ने 6 राज्यों के बीच हुई प्रतियोगिता में तारा स्टोरी प्रथम स्थान विलेज फेयर में प्रथम स्थान ग्रुप सॉन्ग में प्रथम स्थान बुलबुल ग्रीटिंग फैशन शो ड्राइंग कंपटीशन ग्रुप डांस में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। बता दें कि रीजनल लेवल कव बुलबुल उत्सव 31 अक्टूबर से 4 नवंबर तक जिला ट्रेनिंग सेंटर ऐशबाग लखनऊ मनोरंजन केंद्र में आयोजित किया गया। प्रतियोगिता में हरियाणा ,उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, पूर्वोत्तर रेलवे वाराणसी, गोरखपुर, लखनऊ पूर्वोत्तर रेलवे, के कब बुलबुल टीमों ने हिस्सा लिया। शाहजहांपुर के कंपोजिट विद्यालय अटसलिया एव कंपोजिट विद्यालय मॉडल हथोड़ा बुजुर्ग की टीम ने एटीएसए विनय कुमार मिश्रा,निकहत परवीन जिला स्काउट मास्टर ,जिला ट्रेनिंग कमिश्नर दपिंदर कौर जिला गाइड कैप्टन सुखमीत कौर हिमालय बुडवैज के निर्देशन में कब ललित, अजीत, आयुष, आशीष, आफ्ताब, अभ्यास कुमार, बुलबुल में काव्या, सुरभि,आलिया, आरुषि, श्रेया, शिवांशी, का सराहनीय प्रदर्शन रहा।

लोक पहल, राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक, मुमुक्षु आश्रम, शाहजहाँपुर, प्रधान संपादक अरूण पाराशरी

लोक पहल हिन्दी साप्ताहिक स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक डा. अवनीश कुमार मिश्रा द्वारा शाहजहाँपुर प्रिन्टर्स जज साहब वाली गली, तारीन बहादुरगंज जिला शाहजहाँपुर 242001 से मुद्रित व 160 रोशनगंज लक्ष्मी राईस मिल, शाहजहाँपुर 242001 उ0प्र से प्रकाशित। संपादक–सुयश सिन्हा मो. 9935740205 E-mail : lokpahalspn@gmail.com समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र शाहजहाँपुर होगा।

दीवाली से पहले गैस चैम्बर बना उत्तर भारत

डा. आलोक कुमार सिंह
शाहजहांपुर

पूरे उत्तर भारत की हवाएं इस वक्त खराब हैं। प्रत्येक वर्ष दीपावली के पूर्व से ही वायु प्रदूषण की स्थिति दयनीय होती रहती है, परन्तु सरकारी एजेंसियां इसके लिए केवल पटाखों और पराली जलने की घटना पर दोषारोपण कर अपने जिम्मेदारी को इतिश्री कर लेती हैं। दिल्ली-एनसीआर के कई स्थानों पर एयर क्वालिटी इंडेक्स 5 के पार चला गया है, तो वहीं अपने शाहजहांपुर शहर में पिछले एक सप्ताह से एक्यूआई 100 से बढ़ते हुए 150 के आसपास पहुंच चुका है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के आंकड़ों के अनुसार 6 नवंबर को सुबह 5 बजे राजधानी दिल्ली में एक्यूआई 500 से ऊपर दर्ज किया गया जबकि नोएडा के आसपास ऐ 600 तक पहुंच कर पूरे क्षेत्र को गैस चेंबर जैसा बना दिया है। महत्त्वपूर्ण सवाल ये है कि आखिर ठंड शुरू होते ही प्रदूषण का स्तर क्यों बढ़ जाता है? बता दें कि एयर क्वालिटी इंडेक्स शून्य से 5 के बीच 'अच्छा', 51 से १०० के बीच 'संतोषजनक', 101 से 200 के बीच 'मध्यम', 201 से 300 के बीच 'खराब', 301 से 400 के बीच 'बहुत खराब' और 401 से ५०० के बीच 'गंभीर' माना जाता है।

हमारे देश में प्रदूषण एक बड़ी समस्या है और यह पूरे साल रहती है लेकिन सर्दियों में यह खतरनाक स्तर पर पहुंच जाती है. इसकी एक वजह तो है मानव, पर्यावरण और उद्योग जनित प्रदूषण है और दूसरी बहुत ही महत्वपूर्ण वजह है भौगोलिक कारण, जिसपर बहुत ही कम ध्यान दिया जाता है।

आमतौर पर ऐसा होता है कि हम जितना जमीनी सतह से ऊपर की तरफ चलते हैं उतना ही तापमान कम होता जाता है और ठंड बढ़ती जाती है लेकिन सर्दियों में जमीनी सतह के ठंडी होने के चलते टेंपरेचर इनवर्जन की प्रक्रिया होती है। जिसमें जमीनी सतह का तापमान ठंडा होता है और ऊपर की तरफ जाने पर तापमान बढ़ता जाता है। ऐसे में जब सर्दियां की रातों में जमीन सूरज से मिली गर्मी को रिलीज करती है और ठंडी होती है तो रिलीज की गई गर्मी ऊपर उठकर एक गर्म परत बना लेती हैं. जिसके चलते हवा ऊपर नहीं उठ पाती। ठंडी हवा में ज्यादा मूवमेंट नहीं होती और वह लगभग स्थिर अवस्था में रहती है, जिससे हवा वायुमंडल में नीचे ही रहेगी। साथ ही हवा के कणों के साथ पर्यावरण का प्रदूषण भी मिल जाता है, जिससे धुंध बन जाती है, इसी कारण सर्दियों की सुबह काफी धुंध होती है।

जब सर्दियों में टेंपरेचर इनवर्जन इफेक्ट के चलते हवा वायुमंडल में नीचे बहती है तो प्रदूषण के कण हवा के कणों के साथ मिल जाते हैं। यही प्रदूषण है जो एयर क्वालिटी को खराब करता है, जिससे सांस लेने में तकलीफ, आंखों में जलन और दृश्यता में कमी जैसी परेशानी होती है। प्रदूषण के चलते हवा में सल्फर डाइ ऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड जैसे प्रदूषकों की सांद्रता बढ़ जाते हैं। यह प्रदूषण इंसानों में अस्थमा, कैंसर, स्ट्रोक्स और अल्जाइमर का कारण बन सकता है। दूसरा महत्त्वपूर्ण कारक है जेट स्ट्रीम, जिसके चलते उत्तर भारत में वायु प्रदूषण बढ़ जाता है। जेट स्ट्रीम वायुमंडल की निचली परत क्षोभमंडल के ऊपरी इलाके में पश्चिम से पूर्व की ओर चलने वायु तीव्र हवाएं हैं। ये हवाएं अफगानिस्तान के पास हिंदूकुश पर्वत शृंखला से टकराकर दो हिंस्सों में विभाजित हो जाती है। एक हिस्सा उत्तर की ओर तिब्बत के पठार के उत्तर में गति करता है। जबकि दूसरा हिस्सा हिमालय के दक्षिण में उत्तर भारत के मैदान के ऊपर से गुजरता है। ये हवाएं जाड़े में और अधिक प्रभावी हो जाती हैं और हिंदुकुश से गंगा मैदान की तरह ऊपर से नीचे की तरफ गति करती हैं। जिससे हवाएं नीचे से ऊपर की तरफ नहीं जा पाती हैं और उत्तर भारत की प्रदूषित हवाएं धरातल के करीब इकट्ठी हो जाती हैं। साथ ही अधिक घनत्व वाली प्रदूषित हवाओं के कारण प्रभावित इलाके में प्रदूषण का स्तर बढ़ जाता है।

इसके अलावा उत्तर भारत का गंगा मैदान जैसे पंजाब, दिल्ली, यूपी, बिहार और पश्चिमी बंगाल हिमालय और प्रायद्वीपीय पर्वतों से घिरा हुआ एक घाटी इलाका है। जिसके कारण कम गति वाली हवा बाहर नहीं निकल पाती हैं. और पूरा का पूरा इलाका जाडे के मौसम में गैस चेम्बर में बदल जाता है।

सर्दी में मिक्सिंग हाइट (जमीन की सतह से वह ऊंचाई, जहां तक आबोहवा का विस्तार होता है) कम होती है। गर्मियों के औसत चार किमी के विपरीत सर्दियों में यह एक किमी से भी कम रहता है। वहीं, वेंटिलेशन इंडेक्स (मिक्सिंग हाइट और हवा की चाल का अनुपात) भी संकरा हो जाता है. इससे प्रदूषक ऊंचाई के साथ क्षैतिज दिशा में भी दूर-दूर तक नहीं फैल पाते। पूरा इलाका ऐसे हो जाता है, जैसे कंबल से उसे ढंक दिया गया हो।

गर्मी के उलट सर्दी में दिल्ली पहुंचने वाली हवाएं उत्तर, उत्तर-पश्चिम, उत्तर-उत्तर-पश्चिम और पश्चिम से दिल्ली-एनसीआर में पहुंचती हैं। वातावरण की ऊपरी सतह पर चलने वाली यही हवाएं प्रदूषकों को दूसरे शहरों से दिल्ली लेकर पहुंचती हैं। जबकि धरती की सतह पर चलने वाली हवाओं की चाल धीमी होती है। इसके अतिरिक्त मानव जनित गतिविधियां भी वायु गुणवत्ता को खराब करने में अहम योगदान देती है।

जिनमें वाहनों से निकलने वाला धुंआ, भारी उद्योगों और पावर जेनरेशन से होने वाला प्रदूषण, छोटे उद्योगों से होने वाला प्रदूषण, सड़कों पर उड़ने वाली धूल और कंस्ट्रक्शन एक्टिविटीज, पराली को जलाने, जंगलों में लगने वाली आग और खेती के दौरान उड़ने वाली धूल है। सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च की एक रिपोर्ट के अनुसार, वाहनों से निकलने वाला धुआं वायु प्रदूषण के लिए 30 फीसदी, ईंधन जलने से 20 फीसदी, मिट्टी और धूल के कारण 20 फीसदी, इंडस्ट्रीज के कारण 15 फीसदी, खुले में कुड़ा जलाने से 15 फीसदी, डीजल वाहनों और मशीनों से 10 फीसदी, पावर प्लांट्स से 5 फीसदी वायु प्रदूषण करते हैं।

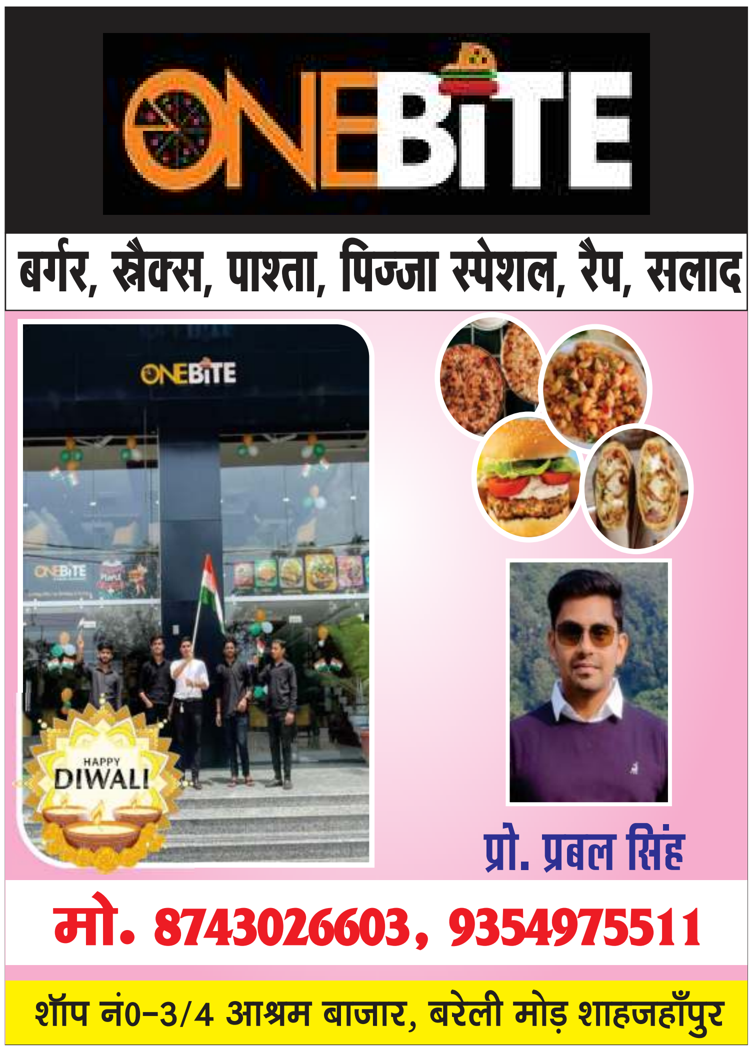

आया दीपों का त्योहार

आया दीपों का त्योहार, खुशियां लाया बड़ी अपार,
इक अदने से दीपक ने दी तम को है ललकार।
आया दीपों का त्योहार, आया दीपों का त्योहार ...॥

कहीं छुरछुरी और पटाखे छूटे कहीं अनार,
रंग-बिरंगे कंदीलों से चमक रहे घर-द्वार।
बचुआ हंस रहे ताली मार...आया दीपों का त्योहार॥

दीया-कुचरिया गढ़ने वाले कुनबे भरें कुलाचें,
सोंधी मिट्टी सिर पर रखकर चाक दनादन नाचें।
सबका चल रहा कारोबार...आया दीपों का त्योहार॥

लड्डू-पेड़ा के संग आए घर में खील-खिलौने,
गौरा सुत-लक्ष्मी पूजन को बिछने लगे बिछौने।
चहुंदिसि हो रही जय-जयकार...आया दीपों का त्योहार॥

चहर दिवरिया और अटरिया, सब में दीप कतारें,
घर-आंगन मा सजी रंगोली, इक टक सभी निहारें।
मिट गया देखो सब अंधियार...आया दीपों का त्योहार॥

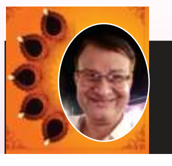

अजय अवस्थी, शाहजहांपुर

अंधकार पर प्रकाश की और अज्ञान पर ज्ञान की विजय का प्रतीक दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ

मुमुक्षु शिक्षा संकुल के अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती द्वारा जिले के युवाओं को कानून की शिक्षा देकर कानून व्यवसाय से जोड़ना इस संस्थान का लक्ष्य है। 25 फरवरी 2003 को उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल महामहिम विष्णुकांत शास्त्री द्वारा यहां विधि त्रिवर्षीय कक्षाओं के साथ इसका शुभारंभ किया गया। वर्ष 2007 में यहां विधि पंचवर्षीय कक्षाओं का प्रारंभ हुआ। महाविद्यालय का भवन अत्यधिक सुविधाओं से परिपूर्ण तथा एक भव्य मंजिला इमारत है। यहां बहुविध राष्ट्रीय स्तर की शैक्षणिक तथा गैरषैक्षणिक गतिविधियां संचालित की जाती है। वर्ष 2017 में महाविद्यालय को नेक मूल्यांकन में बी प्लस का ग्रेड प्रदान किया गया है। वर्ष 2018 से यहां एलएलएम की कक्षाएं भी प्रारंभ हो गई है। यहां 550 के तकरीबन छात्र-छात्राएं कानून की शिक्षा प्राप्त कर रहे है। जबकि अध्यापकों की संख्या 50 है। सत्र 2020-21 से महाविद्यालय में ई-प्लेटफार्म एसएसएलसी एक्ट के माध्यम से प्रवेश प्रक्रिया आनलाईन है। जबकि शिक्षण तथा संवाद की सुविधा को और अधिक प्रभावी बनाने के उद्देश्य से ई-गर्वनमेन्स तथा फैडेना पोर्टल का सफल संचालन किया जा रहा है। महाविद्यालय द्वारा समय-समय पर व्याख्यान मालाएं, न्यायालय-जेल भ्रमण, विधिक साक्षरता केन्द्र इत्यादि कार्यक्रम आयोजित किये जाते है।

डा. अवनीश कुमार मिश्रा
सचिव

स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती
अध्यक्ष, प्रबंध समिति

डा. जयशंकर ओझा
प्राचार्य

पराजित अमावस्या का उच्छवास है दीपावली

सुशील दीक्षित 'विचित्र'
शाहजहांपुर

दीपावली पराजित अमावस्या का उच्छवास है। पौराणिक कथाओं व ग्रंथो में भी दीपावली को प्रकाश पर्व कहा गया है। दीपावली का त्योहार हमको एकरसता को समाप्त कर समरसता का संदेश देता है। छोटे –छोटे दीपों की श्रृंखला धरती पर व्याप्त अमावस के अंधेरे को परास्त कर धरती को प्रकाशमय कर देते द्य पद्म पुराण और स्कंद पुराण में दीपावली का उल्लेख आया है द्य लिखा है कि यक्ष समुदाय पहाड़ों पर कार्तिक कृष्ण पक्ष की अमावस्या पर दीपक जला कर पहाड़ों को आलोकित करते थे।

भारतीय धर्मशास्त्रों में दीपावली को दीपोत्सव कहा गया है। जैन और सिख धर्मग्रंथों में भी दीपावली के महत्व को दर्शाया गया है। जैन समुदाय महावीर स्वामी के निर्वाण दिवस के रूप में इस दिन प्रकाश पर्व मनाते है तो सिखों में अमृतसर के हरमंदिर के निर्माण और गुरु हरगोविंद को ग्वालियर किले से रिहा किये जाने की घटना से जोड़ कर दीपश्रृंखला बनाते हैं। हिन्दू समुदाय में मान्यता है कि इस दिन राम वनवास से लौट कर अयोध्या आये थे द्य इस खुशी में अयोध्यावासियों ने दीप जला कर उनका स्वागत किया था। कुछ क्षेत्रों में दीपावली को नरकासुर वध से जोड़ा गया है जिसे कार्तिक महीने के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को श्रीकृष्ण ने सत्यभामा के सहयोग से मारा था। नरकासुर के अत्याचार से पीड़ित जनता ने उसके वध पर भारी उत्सव मनाया तथा दीपक जला कर रात भरा प्रकाश किया।

भारत के अन्य हिस्सों की अलग अलग कहानियां है जिनके आधार पर अलग अलग तरीके से दीपावली मनाई जाती है। समानता है यह है कि इस दिन दीपको की कतारें सभी राज्यों में सजाई जाती हैं। अलबत्ता दीपावली को मनाने के पीछे कहानियां जो भी रही हों लेकिन यह ध्यान रखने की बात है कि सनातन सभ्यता के प्रवर्तक नीति नियंताओं ने हर पर्व को प्रकृति से जोड़ा और प्रकृति को धर्म से। इसके लिए तमाम तत्कालीन घटनाओं का भी सहारा लिया गया और ऐसी तकनीक का निर्धारण किया जो मौसमजन्य प्रकृति के विकारों का शमन कर सके। भारतीय पर्वों की एक विशेषता यह भी है कि हर पर्व कोई न कोई सन्देश लिए आता है। दीपावली का सन्देश है असतो मा सद्गमय–असतो मा ज्योतर्गमय अर्थात मुझे असत्य से सत्य की ओर और अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो द्यसत्य से प्रकाशित समाज की संरचना का यह मूल मंत्र है। वस्तुत: जिस प्रकार दीपों की एकता धरती को ज्योतिर्मय कर देती है उसी प्रकार जन–जन के सहयोग से राष्ट्र की उन्नति सम्भव हो पाती है।

दीपावली के सन्देश को भारतीयों ने विदेशों तक फैलाया जिसके चलती दीपावली भारतीय सरहदों को पार कर विश्व के कई देशों में फैल गयी। जिस प्रकार मनुष्य को जीवन में चुनौतियों से सामना करना पड़ता है उसी प्रकार देश व समाज को भी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। पौराणिक कथाओं व ग्रंथो में भी दीपावली को प्रकाश पर्व कहा गया है। दीपावली का त्योहार हमको एकरसता को समाप्त कर समरसता का संदेश देता है। छोटे –छोटे दीपों की श्रृंखला धरती पर व्याप्त अमावस के अंधेरे को परास्त कर धरती को प्रकाशमय कर देते हैं। पद्म पुराण और स्कंद पुराण में दीपावली का उल्लेख आया है। लिखा है कि यक्ष संदाय पहाड़ों पर कार्तिक कृष्ण पक्ष की अमावस्या पर दीपक जला कर पहाड़ों को आलोकित करते थे। भारतीय धर्मशास्त्रों में दीपावली को दीपोत्सव कहा गया है। जैन और सिख धर्मग्रंथों में भी दीपावली के महत्व को दर्शाया गया है। जैन समुदाय महावीर स्वामी के निर्वाण दिवस के रूप में इस दिन प्रकाश पर्व मनाते है तो सिखों में अमृतसर के हरमंदिर के निर्माण और गुरु हरगोविंद को ग्वालियर किले से रिहा किये जाने की घटना से जोड़ कर दीपश्रृंखला बनाते हैं। हिन्दू समुदाय में मान्यता है कि इस दिन राम वनवास से लौट कर अयोध्या आये थे। इस खुशी में अयोध्यावासियों ने दीप जला कर उनका स्वागत किया था। कुछ क्षेत्रों में दीपावली को नरकासुर वध से जोड़ा गया है जिसे कार्तिक महीने के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को श्रीकृष्ण ने सत्यभामा के सहयोग से मारा था। नरकासुर के अत्याचार से पीड़ित जनता ने उसके वध पर भारी उत्सव मनाया तथा दीपक जला कर रात भरा प्रकाश किया। भारत के अन्य हिस्सों की अलग अलग कहानियां है जिनके आधार पर अलग अलग तरीके से दीपावली मनाई जाती है। अलबत्ता दीपावली को मनाने के पीछे कहानियां जो भी रही हों लेकिन यह ध्यान रखने की बात है कि सनातन सभ्यता के प्रवर्तक नीतिनियंताओं ने हर पर्व को प्रकृति से जोड़ा और प्रकृति को धर्म से। इसके लिए तमाम तत्कालीन घटनाओं का भी सहारा लिया गया और ऐसी तकनीक का निर्धारण किया जो मौसमजन्य प्रकृति के विकारों का शमन कर सके। भारतीय पर्वों की एक विशेषता यह भी है कि हर पर्व कोई न कोई सन्देश लिए आता है। दीपावली का सन्देश है असतो मा सद्गमय–असतो मा ज्योतर्गमय अर्थात मुझे असत्य से सत्य की ओर और अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो। सत्य से प्रकाशित समाज की संरचना का यह मूल मंत्र है। वस्तुत: जिस प्रकार दीपों की एकता धरती को ज्योतिर्मय कर देती है उसी प्रकार जन–जन के सहयोग से राष्ट्र की उन्नति सम्भव हो पाती है। दीपावली के सन्देश को भारतीयों ने विदेशों तक फैलाया जिसके चलती दीपावली भारतीय सरहदों को पार कर विश्व के कई देशों में फैल गयी।वर्तमान में भी चुनौतियां खड़ी है। एक तरफदेश में आर्थिक चुनौती है तो दुसरीं तरफदेश में सामाजिक सद्भाव की चुनौती है। इन चुनौतियों पर विजय प्राप्त करने के लिए देश के जन–जन को अपनी भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी और चुनौती रूपी अंधकार को दियों की भांति एकत्र होकर मिटाना होगा है। तभी देश भी उन्नति की ओर अग्रसर होगा।

अंधकार पर प्रकाश की और अज्ञान पर ज्ञान की विजय का प्रतीक दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ

8 अगस्त 1942 को जिस दिन भारत की आजादी के लिए महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारत छोड़ो आन्दोलन शुरू किया गया उसी दिन ब्रह्मलीन स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज द्वारा वैदिक शिक्षा के प्रचार व प्रसार के उद्देश्य से मुमुक्षु आश्रम परिसर में श्री दैवी सम्पद संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना की गई। इस विद्यालय के लिए जमीन भारत के गृहमंत्री गुलजारी लाल नंदा जी ने उत्तर प्रदेश सरकार के तत्कालीन मुख्यमंत्री पंडित गोविन्दबल्लभ पंत जी से कहकर दिलवायी थी। यहां आचार्य तक की शिक्षा प्रदान की जाती है। महाविद्यालय का उद्देश्य हिन्दू दर्शन, वेद पुराण की शिक्षा देकर युवाओं को राष्ट्र के सांस्कृतिक पुनरूत्थान से जोड़ना है। महाविद्यालय वाराणसी सम्पूर्णानंद संस्कृत महाविद्यालय से सम्बद्ध है। वर्तमान में यहां पर 1०० से अधिक छात्र तथा 9 शिक्षक कार्यरत है।

डा. श्रीप्रकाश डबराल
प्रबन्धक

स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती
अध्यक्ष, प्रबंध समिति

करूणा शंकर तिवारी
प्राचार्य

अंधकार पर प्रकाश की और अज्ञान पर ज्ञान की विजय का प्रतीक दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ

सन 1941 में पूज्य स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज शाहजहांपुर में लाला अमरनाथ टंडन के यहां चौक स्थित निवास स्थान पर पधारें। उन्होंने सिविल लाइंस की विशम्भर कुटी को अपना तपस्या स्थल बनाया तत्पश्चात उन्हें आश्रम हेतु पर्याप्त भूमि शहर के ही विशन चन्द्र सेठ के परिवार से मढ़ा स्थान पर मिल गई। यहीं पर सन् 1942 में मुमुक्षु आश्रम की स्थापना हुई। वर्तमान में यह 50 एकड़ से अधिक भूमि पर फैला हुआ है। आश्रम में केदारेश्वर भगवान, श्री राम दरबार, भगवान राधाकृष्ण के सुन्दर मन्दिर एवं झाकियां है। पूजा स्थल के अतिरिक्त आश्रम शिक्षा का सुप्रसिद्ध केन्द्र है। इसके अन्तर्गत स्वामी शुकदेवानन्द पीजी कालेज, श्री दैवी सम्पद संस्कृत महाविद्यालय, श्री दैवी सम्पद इण्टर कालेज, स्वामी शुकदेवानन्द लॉ कालेज व श्री शंकर मुमुक्षु विद्यापीठ स्थित है। 11 फरवरी 1988 से पूर्व केन्द्रीय गृहराज्यमंत्री स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती आश्रम के मुख्य अधिष्ठाता के पद पर आसीन है। समय-समय पर देश विदेश की अनेक महान विभूतियां यहां आती रही है। इनमें मुख्य रूप से राष्ट्रपति डो राजेन्द्र प्रसाद, सर्वपल्ली राधाकृष्णन, लोकसभा के प्रथम अध्यक्ष जीवी मावलंकर, श्री गुलजारी लाल नंदा, श्री लालकृष्ण आडवाणी, श्री विष्णुकांत शास्त्री, श्री कल्याण सिंह जी, डो मुरलीमनोहर जोशी, सुन्दर लाल बहुगुणा इत्यादि शामिल है। आश्रम अपनी प्राकृतिक विविधता के लिए भी सुप्रसिद्ध है।